1° SANGREHA

Manuscript No 5

1230

1230

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Sans. Ms.
294.592
S226

1230-Ms.

संग्रह मन्त्र, (?) ; संस्कृत
भाषा तथा देवनागरी लि०
५० पत्रक ॥ ६ पं० प्र० पृ०

पूर्णिक अप्राप्य

संस्कृत ह० लि०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

1230 MS.

ॐ नमो भवान्यै ॥ ॐ शंखत्रिशूलशरचापकरा
ं त्रिनेत्रां ॥ तिग्मेतरांशुकलया विकसत्किरी
टां ॥ सिंहस्थितां ससुरसिद्धनतां च दुर्गां ॥ दूर्वा
निभां दुरितहां त्वहमीं नमामि ॥१॥ ॐ अरुणकला

भ
स
१

ऊलयंतेनी ॥ वक्रमध्येस्फुरंतेनी ॥ मधुरमधुपि
वेनी ॥ केवकाम्भनयंतेनी ॥ डुरितमपहंतेनी ॥ सा
धकानांघयंतेनी ॥ जयतिजगतिदेवी ॥ श्रीमहेंद्रा
दीक्षीडयंतेनी ॥ ॐचतुर्भुजानामेककवचो ॥ श्रीगौंडवा।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रत्नप्रभां ॥ खड्गशक्तिधरांदेवीं ॥ वरदाभयपा
णिकां ॥ श्वेतसंस्थामहागौरीं ॥ भुजगेन्द्रोपवीति
नीं ॥ भवानींकालसंहारां ॥ बहुशस्त्राविभूषितां
जगत्स्थितिकरींब्रह्म ॥ विष्णुरुद्रादिभिःस्तैः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भस
२

स्तंतेतांपरमेशानीं॥ नौम्यहंविघ्नहारिणीम
ॐनमोभवान्यै॥ कैलासशिखरेरम्ये॥ देवदे
वंमहेश्वरं॥ ध्यानोपरनमामीनं॥ प्रसन्नमुख:
पंकजे॥ स्वगात्रवरशिरोरत्न॥ रंजितांघ्रियुगाश्र

पे ॥ प्रणम्यशिरसादेवी ॥ बद्धांजलिरभाषत ॥
श्रीनंदिकेश्वरउवाच ॥ देवदेवजगन्नाथ ॥ से।
शयोत्थिमहात्मम ॥ रहस्यमेकमिच्छामि ॥ प्रष्टुं
त्वांभक्तवत्सले ॥ देवनायात्वयाकथ्याः ॥ त्वा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
म
६

त्रमेतन्हिवानिशं॥ पद्मैतेविरतेनाथ॥ त्वत्नः।
किमपरःपरः॥ इतिपृष्टस्तदादेवो॥ नेमिकेन
जगाद्गुरुः॥ प्रोवाचभगवानेको॥ विक्रमत्वेत्र
पंकजः॥ श्रीभगवानुवाच॥ माधमाधमगाणाश्रे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र ॥ शृणुध्वानमिमंवचन ॥ स्कंदस्यापिवचञो ।
द्यं ॥ रहस्यंकथयामितत ॥ पुराकल्पक्षयेलो ।
का ॥ मिस्त्वर्शूछवेनतनः ॥ गुणत्रयमयीशक्ति
र्मूलप्रकृतिसंज्ञिता ॥ तस्यामहंसमुत्पन्न ॥ म

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
४

द्वैधैर्मैहृद्दाद्रिभिः ॥ वैनवेतिननःशक्ति ॥ मो।
काय्यालिंगयनस्तुषी ॥ हेनःसेकल्पजालस्य
मनोधिष्ठायिनीशुभा ॥ इच्छेतिपरमाशक्ति ॥
तत्त्विमीलननःपरम ॥ ननोवागितितिविख्या।

ना ॥ शक्तिःषाडूमर्षीउता ॥ प्राउताक्षीजगन्माता ॥

वेदमातासरस्वती ॥ ब्राह्मीवैस्नवीरौद्री ॥ कौ१

मारीपार्वतीशिवा ॥ सिद्धिदाबुद्धिदाशांता ॥ सर्व

मंगलदायिनी ॥ नैयेनमस्ज्यतेविश्व ॥ मनाधारं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ स ५

यथार्थैते ॥ तैर्येतन्याल्पते सर्वे ॥ तस्यामेवप्रली-
यते ॥ अविनाशनानाध्याना ॥ सर्वभावविनिश्चि-
तैः ॥ आराधितात्मनामेव ॥ सर्वसिद्धिप्रदायिनी
तस्याश्चानुग्रहादेव ॥ तामेवात्मनवानहे ॥ सहदेवे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नोमभिरंद्ये ॥ त्रैलोक्यप्राणिरक्षिनैः ॥ त्वंवेना
नेनमंत्रषा ॥ मामेवप्रविवेशमा ॥ नरादधमसया
शमं ॥ मैश्वर्यंपरश्तनममम ॥ नत्सभावात्मया १
रुढं ॥ जगादेवसुगावम ॥ ममहाममहागंधर्वे ॥ ६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वराननसमाननं ॥ सपत्नगंससमुद्रं ॥ सशैलवन
काननं ॥ सराशिग्रहनक्षत्रं ॥ पंचभूतगणान्वि
तं ॥ नेदिन्नामसहस्रेण ॥ स्तवेनानेन सर्वदा ॥ स्त
वेपगापंशाक्तिं ॥ ममानुग्रहकारिणी ॥ इत्युक्तो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पार्नेस्व ॥ चराचरगुहेविधे ॥ अगम्यश्चिरमा ।
नेसी ॥ प्रोवाच परमेश्वरं ॥ श्रीनंदिकेश्वरउवा
च ॥ भगवन्देवदेवेश ॥ लोकनाथजगत्पते ॥ ।
भक्तोस्मि नवदासोस्मि ॥ अमात्यः क्रियतां मयि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देव्याः स्तवमिमं श्रुत्वा ॥ उवाच परमेश्वरीं ॥ श्रो
तुमिच्छाम्यहं देव ॥ प्रभावमपि चास्य तु ॥ श्री
भगवानुवाच ॥ शृणु देवि महाभागे ॥ स्तवरा
जमिमं शुभं ॥ सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैः ॥ सिद्धिदं सु-

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क्षेमो नरैः॥ शुचिभिः प्रातरुत्थाय॥ पठितव्यं
समाहितैः॥ त्रिकालं श्रद्धया युक्तैः॥ नातः परत
रः स्तवः॥ ॐ अस्य श्रीभवानीनामसहस्रस्तवरा
जस्य॥ श्रीमहादेवऋषिः॥ आद्याशक्ति॥ भग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
८

वतीभवानीदेवता ॥ अथर्ववेदः ॥ सकलका
मनासिद्ध्यर्थे ॥ पाठे विनियोगः ॥ ओं बीजत्रयायै
विद्महे ॥ तत्प्रधानायै धीमहि ॥ तन्नः शक्तिः प्रचो
दयात् ॥ अथ ध्यानं ॥ ओं बालार्कमंडलाभासं ॥ च

नबींद्रंत्रिलोचनं ॥ पाशांकुशधरंदेवं ॥ ध्याय
येन्नीशिवंभजे ॥ ॐ अर्धेंदुमौलिममलाममरा
भिवंद्या ॥ मम्भोजपाशसृणिरक्तकपालहस्तां ॥
रक्तांगरागवसनाभरणांत्रिनेत्रां ॥ ध्यायेच्छिव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
म
५

ख्यवतितोमदविह्वलांगीम् ॥ श्रीईश्वरउवा
च ॥ ॐमहाविद्याजगन्माता ॥ महालक्ष्मीःशि
वप्रिया ॥ विष्णुमायाशुभाशांता ॥ सिद्धासिद्धम
रखनी ॥ क्षमाकांतिःप्रभाज्योत्स्ना ॥ पार्वतीसर्व

मंगला ॥ हिंगुलाचंडिकासेना ॥ पद्मालक्ष्मीह
रिप्रिया ॥ त्रिपुरानंदिनीनेत्रा ॥ हनेत्राहरवे।
दिना ॥ यज्ञविद्यामहामाया ॥ वेदमाताहधा।
धृतिः ॥ प्रीतिप्रियाप्रसिद्धाच ॥ मृडानीविंध्यवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
म
१

मिनी॥ सिद्धविद्यामहाशक्तिः॥ सृष्टीनांवरमो।
विना॥ अतद्वतप्रियाकोना॥ कामिनीपद्मलोच
ना॥ प्रल्हादिनीमहामाना॥ दुर्गादुर्गतिनाशि।
नी॥ ज्वालामुखीमहोगाभाव॥ ज्योतिःकुमुदहासिनी

उंमाडल्लेभाविद्या॥ स्वर्गनिःश्रवासिनी॥ अ

पर्णाश्वाम्बरीमाया॥ महिमाम्डहासिनी॥ क्र

लवाणीश्वरीनित्या॥ नित्यक्लिन्नाकृशोदरी॥

कामेश्वरीचनीलाच॥ भीकेंडावह्निवासिनी॥।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ स ॥

लंबोदरी महाकाली ॥ विद्याविद्येश्वरी तथा ॥

नरेश्वरी च संध्या च ॥ सर्वसौभाग्यवर्धिनी ॥ ॥

संकर्षिणी नारसिंही ॥ वैष्णवी च महोदरी ॥ ॥

कात्यायनी च चंपा च ॥ सर्वसम्पत्तिकारिणी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नारायणीमहानिद्रा ॥ योगनिद्राप्रभावती ॥
प्रज्ञापारमिताप्रज्ञा ॥ तारामधुमतीमधुः ॥ १
क्षीरार्णवसुताहाला ॥ कालिकासिंहवाहना
ॐकारावसुधाहारा ॥ चेतनाकोपनाकृतिः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ· स· ११

ग्रर्थेविंडधराधीता ॥ विश्वमाताकलावती ॥
पद्मावतीमहवल्लाच ॥ प्रभुडावसरस्वती ॥।
ॐउामहनाजगडात्री ॥ ब्रुडमाताजिनेश्वरी ॥
जिनमाताजिनेंद्राव ॥ शारदाहंसवाहना ॥।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राज्यलक्ष्मीर्वषट्कारा॥ सुधाकारा सुधात्मिकं

राजनीतिस्त्रयीवार्ता॥ दंडनीतिः क्रियावती॥

सद्भूतिस्तारिणी श्रद्धा॥ सद्गतिः सत्यपरायणा॥

सिंधुर्मंदाकिनी गंगा॥ यमुना च सरस्वती॥१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
१२

गोदावरीविपाशाच ॥ कावेरीवशतद्रवा ॥
सरयूश्चेद्रभागाच ॥ कौशिकीगण्डकीशुचि :
नर्मदाकर्मनाशाच ॥ पेरावत्ययदेविका ॥ १
वेत्रवतीविनस्ताच ॥ ।। ॥ वरदानववाहना ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सती पतिव्रता साध्वी ॥ हृचक्रः कुंडवासिनी ॥
एकचक्रः सहस्राक्षी ॥ हृश्रोणिर्भगमालिनी ॥
सेना श्रेणिः पताका च ॥ हृब्रह्माण्डकोटिणी
पताकिनी टयारम्भा ॥ विपंचीपंचमप्रिया ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ स ४

परापरकलाकोना ॥ त्रिशक्तिर्मोक्षदायिनी ॥
ऐंद्री माहेश्वरी ब्राह्मी ॥ कौमारी कुलवासिनी
इच्छा भगवती शक्तिः ॥ कामधेनुः कृपावती ॥
वज्रायुधा वज्रहस्ता ॥ चण्डी चण्डपराक्रमा ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गौरीह्यवर्णावर्णा च ॥ स्थितिसंहारकारिणी ॥
एकानेकामहेज्या च ॥ ध्यानबाहुर्महाभुजा ॥ ॥
भुजंगभूषणाभूष्या ॥ षट्चक्रक्रमवासिनी ॥
षट्चक्रभेदिनी श्यामा ॥ कायस्थाकायवर्जिता ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ. स. १५

ह्रसितामिश्रवीनामा ॥ मूलप्रकृतिरीश्वरी

प्रज्ञा च बहुवर्णा च ॥ पुरुषार्थप्रवर्तिनी ॥ र

क्ता नीला सिता श्यामा ॥ कृष्णा पीता च कर्बुरा

क्षुधा तृष्णा जरा वृद्धा ॥ तरुणी करुणालया ॥

कलाकाष्ठामुहूर्ताच ॥ निमेषाकालरूपिणी
सुकर्णारसनानासा ॥ चक्षुःस्पर्शवतीरसा ॥
गंधप्रियासुगंधाच ॥ सुस्पर्शाचमनोगतिः ॥
मृगनाभिर्मृगाक्षीच ॥ कर्पूरामोदधारिणी ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पद्मयोनिः सुकेशी च ॥ सुलिंगा भगरूपिणी ॥ ।।
योनिमुद्रा महामुद्रा ॥ खेचरी खगगामिनी ॥ म
धुश्रीर्माधवी वल्ली ॥ मधुमत्ता मदोद्धता ॥ ।। ॥
मातंगी शुकहस्ता च ॥ पुष्पबाणेक्षुचापिनी॰

रक्ताम्बरधरादेवी ॥ रक्तपुष्पावतंसिनी ॥ शु
भ्राम्बरधराधीरा ॥ महाश्वेतावसुप्रिया ॥ सुवे
णीपद्महस्ताच ॥ मुक्ताहारविभूषणा ॥ कर्पू
रामोदनिःश्वासा ॥ पद्मिनीपद्ममंदिरा ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भस २

खड्गिनीचक्रहस्ताच॥ भुशुण्डीपरिघायुधा॥१

कपालिनीपाशहस्ताच॥ त्रिशूलवरधारिणी॥१

कृपाणशक्तिहस्ताच॥ मयूरवरवाहना॥१॥

वराभयधरावीरा॥ वीरपानमदोत्कटा॥१

वसुधावसुधाराच ॥ जयाशाकम्भरीशिवा
विजयावजयंतीच ॥ मालिनीशत्रुनाशिनी
अंतर्वत्नीवेदशक्ति ॥ र्वरदावरधारिणी ॥ १
शीतलाचसुशीलाच ॥ बालग्रहविनाशिनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
१८

ऊमारीचब्रह्मपर्णीच॥ कामाख्याकामवंदि-
ता॥ जालंधरधरानेत्रा॥ कामरूपनिवासिनी
कामबीजवतीसत्या॥ सत्यधर्मपरायणा॥
स्थूलमार्गस्थितासूक्ष्मा॥ सूक्ष्मबुद्धिप्रबोधिनी

षट्कोणाचत्रिकोणाच ॥ त्रिनेत्रावृषभध्वजा ॥
वृषप्रियावृषारूढा ॥ महिषाःसुरघातिनी ॥
शुम्भदर्पहरादीप्ता ॥ दीप्तपावकसन्निभा ॥ क
पालभूषणाकाली ॥ कपालमालभाविणी ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कपालकुण्डला दीर्घा ॥ शिवदूती घनध्वनिः
सिद्धिदा बुद्धिदा नित्या ॥ सत्यमार्गप्रबोधिनी
कंबुग्रीवा वसुमती ॥ छत्रच्छायाकृतालया ॥
जगद्गर्भा कुण्डलिनी ॥ भुजगाकारशायिनी ॥ १

ग्रोल्लतत्त्वप्रपग्राव ॥ नाभिनालमृणालिनी ॥ १
मूलाधारानिराकारा ॥ वह्निकुंडकृतालया ॥ १
वायुकुंडसुखासीना ॥ निराधारानिराश्रया ॥ १
वलीतंत्वसमुत्थाना ॥ षड्रसास्वादलोलुपा ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
गी
४

स्वासोच्छ्वासगतिर्जीवा || ग्राहिणी वह्निसंश्रया
तपस्विनी तपःसिद्धि || तपसा सिद्धिदायिनी
तपोनिष्ठा तपोयुक्ता || तापसी च तपःप्रिया || १
सप्तधातुमयी मूर्तिः || सप्तधात्वंतराश्रया || १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देहशुद्धिर्मनःशुद्धि ॥ रत्नशुद्धिर्बलोद्धता ॥ औ
षधैर्वैद्यमानाच ॥ द्रव्यशक्तिःप्रभावती ॥ वै
द्यावैद्यचिकित्साच ॥ सुपथ्यारोगनाशिनी ॥ ॥
मृगयामृगमांसाच ॥ मृगात्वछगलोचना ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
३

वागगबंधहृणाच ॥ बधहृणाबधोऽझना ॥ बंदी
बंधिस्तंभनाकारा ॥ काराबन्धविमोचिनी ॥ श्रं
बिकाः बालिकांबाबा ॥ स्वदामाधुजनार्चिता ॥
शृंखलाविलखद्दाविद्या ॥ हढबंधविमोचिनी ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कौलिकी कुलविद्या च ॥ सुकुला कुलपूजिता
कालचक्रभ्रमाभ्रान्ता ॥ विभ्रमाभ्रमनाशिनी ॥
वात्याली मेघमाला च ॥ सुवृष्टिः सस्यवर्धिनी ॥
अकारा च इकारा च ॥ उकारैकाररूपिणी ॥ ह्री

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
२२

कालीबीजजपाव ॥ क्लींकाराम्बरवासिनी ॥ स
र्वोत्तरमयीमूर्ति ॥ रत्नावर्णमालिनी ॥ सिं
हासनगावर्णाव ॥ सिंदूरतिलकप्रिया ॥ वा
ग्यावववश्यबीजाव ॥ लोकवश्यविभाविनी ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नृपवश्यानृपैःसेव्या ॥ नृपवश्यकरीप्रिया ॥ १
महिषीनृपमान्याच ॥ नृमान्यानृपनंदिनी ॥ नृ
पधर्ममयीधन्या ॥ धनधान्यविवर्धिनी ॥ चा
तुर्वर्णमयीमूर्ति ॥ श्चतुर्वर्णैश्चपूजिता ॥ ॥ ॥

भ स ४४

सर्वधर्ममयीसिद्धि॥स्वरग्रामवासिनी॥ब्रा
ह्मणीक्षत्रियावैश्या॥शूद्राचावरवर्णजा॥वे
वेदमार्गरतायज्ञा॥वेदविश्वविभाविनी॥अ
स्त्रशस्त्रमयीविद्या॥वरशस्त्रास्त्रधारिणी॥

सुमेधा सत्यमेधा च ॥ भद्रकाल्यपराजिता ॥ ॥
गायत्री सत्कृतिः संध्या ॥ सावित्री त्रिपदाश्रया ॥
त्रिसंध्या त्रिपदी धात्री ॥ सुपर्वा सामगायिनी ॥
पांचाली बालिका बाला ॥ बालक्रीडा सनातनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म
भं·
२४

गर्भाधारधराशूल्या ॥ गर्भाशयनिवासिनी ॥ ह
रारिद्यानिनीकृत्या ॥ रजनाचनिलोत्तमा ॥ ल
ज्ञावमवतीवंध्या ॥ भवानीपापनाशिनी ॥ ॥ ॥
पद्मवरधरागीता ॥ हगीनिर्त्तानलोचना ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सप्तस्वरमयीतंत्री॥षड्जमध्यमदेवता॥मूर्च्छ
नाग्रामसंस्थाच॥स्वस्थास्वस्थानवासिनी॥अ
हाहूहासिनीप्रेता॥प्रीतामतनिवासिनी॥गी
तनृत्तप्रियाकामा॥न्नहिराङहिदातया॥११

भ म २५

तिष्टामृत्युप्रियाप्रज्ञा ॥ लोकेशीवह्निरोत्नमा
मविषाज्वालिनीज्वाला ॥ विषमोहार्तिनाशि।
नी ॥ विषारिर्नागदमनी ॥ कुरुकुल्लामृतोद्भवा ॥।
भूतभीतिहरीरक्षा ॥ भूतावेशविनाशिनी ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रंद्रोग्नीगानसीगद्रि ॥ दीर्घनिद्रादिवागतिः

चंद्रिकाचंद्रकांतिश्च ॥ सूर्यकांतिर्निशाचरी

डाकिनीशाकिनीशिष्या ॥ हाकिनीचक्रवासि

नी सितासितप्रियासंगा ॥ सकलावनदेवता ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म स ३१

गुह्यरूपधरादेवी ॥ मृत्युमारीविषापहा ॥ महा
मारीविनिद्राव ॥ तन्द्रामृत्युविनाशिनी ॥ ११ ॥ चं
द्रमण्डलसंकाशा ॥ चन्द्रमण्डलवासिनी ॥ ।
श्रणिमादिगुणोपेता ॥ सुस्पृहाकामरूपिणी ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भूमिसिद्धिप्रदा प्रौढा ॥ उग्रदानवघातिनी ॥ अ

नादिनिधना पुष्टि ॥ सर्वबीजस्वरूपिणी ॥ चतुः

समुद्रशायना ॥ चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ ११ ॥ का

शपुष्पप्रतीकाशा ॥ शारदम्बुजलोचना ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
२

भूताभव्याभविष्याच ॥ शैलजा शैलवासिनी
वाममार्गरतावामा ॥ शिववामांगवासिनी ॥१
वामाचारप्रियातुष्टि ॥ लोपामुद्राप्रबोधिनी ॥
भूतात्मा परमात्मा च ॥ भूतभावविभाविनी ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मंगलावम्हशीलाव ॥ परमार्थप्रबोधिनी ॥
दक्षिणा दक्षिणा मूर्तिः ॥ हृद्दक्षिणा हरिशम्भुः
योगिनी योगसंज्ञाव ॥ योगंगाध्यानशालि-
नी ॥ योगपट्टधराज्ञा ॥ ज्ञानं परमा गतिः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
२५

नारसिंहीहृजनमाव ॥ त्रिवर्गफलदायिनी ॥ १

धर्मदाधनदाचैवका ॥ कामदामोक्षदाद्युतिः ॥

साक्षिणीक्षणदादक्षा ॥ दक्षजाकोटिरूपिणी

क्रतुःकात्यायनीस्वच्छा ॥ स्वच्छंदाचकविप्रिया ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सत्यारामा बहिःस्था च ॥ काव्यशक्तिः कव्यप्रदा
मेनापुत्री सती माता ॥ मैनाकभगिनी तडित्
सौदामिनी स्वधामा च ॥ सुधामा धामशालिनी
सौभाग्यदायिनी द्यौश्च ॥ सुभगा द्युतिवर्धिनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ सं ५५

श्रीकांतिःवसनाचैव॥ चर्मकीकलिनाशिनी
रक्तबीजवधोद्भूता॥ हतेनबीजसंततिः॥ ॥
जगज्जीवाजगद्बीजा॥ जगत्त्रयहितैषिणी
चामीकररुचिश्चांद्री॥ साक्षाद्याषोडशीकला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पत्तस्यदातुवैधाव ॥ पत्तिणीधनदाचिंता ॥
त्रित्रिणीचित्रमायाच ॥ विचित्राभुवनेश्वरी ॥
वाभुंरानुंरहल्लाच ॥ चंडमुण्डवधोद्भवा ॥ अष्ट
म्येकादशीहमाणी ॥ नवमीवचवन्देशी ॥ ११४ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
४

श्रमाकलशहस्ता च॥ शर्णाङ्कभयदायदा॥ श्र-
भीकभैरवी भीता॥ भीमा त्रिपुरभैरवी॥११॥ मा-
हाकंठवैरोष्टी च॥ महाभैरवपूजिता॥१२॥ वि-
तुंडहस्तिनी चैव॥ करालदशनानना॥१३॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करालाविकरालाच ॥ घोराघुर्घुरनादिनी ॥ र
क्तदंतोर्ध्वकेशीच ॥ बंधूककुसुमारुणा ॥ का
दम्बरीपलाशाच ॥ काश्मीरीकुंकुमप्रिया ॥
कांताबहुसुवर्णाच ॥ मतिर्बहुसुवर्णदा ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ. स. ३१

मातंगिनीवरारोहा ॥ मत्तमातंगगामिनी ॥
हिमाहेमगतिर्हंसी ॥ हंसोज्वलशिरोरुहा ॥
पूर्णचन्द्रमुखीश्यामा ॥ स्मितास्याश्यामकुंतला
मषीवलेखनीलेख्या ॥ सुलेखालेखकप्रिया

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
म
११

कौशिकीवक्रशावर्ता ॥ कौशांभीकोशवर्धिनी
कोशशायघकोशाली ॥ ॐह्रंभज्रह्ममश्रिघा ॥ १
तोनलावक्तलाकोटिः ॥ कोटिस्थाकोटराश्रया ॥
ह्वपम्भ्रस्त्रह्रग्रभाव ॥ ह्वह्नपाड्पवर्धिनी ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शंखिनीशंखहस्ताच॥जलस्थाजलदेवता॥१
ऊहलेत्रावनिःकाशी॥मथुराकोव्यवंतिका
अयोध्याद्वारिकामाया॥तीर्थातीर्थकरप्रिया॥
त्रिपुष्कराश्वमेधाच॥कोशस्थाकोशवासिनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तेजस्विनीत्रिभिर्ध्येया ॥ बलदाबलदायिनी ॥
महाकोशामहावर्त्ता ॥ बुद्धिःसदसदात्मिका ॥
महाग्रहहरासौम्या ॥ विशोकाशोकनाशिनी ॥
सात्त्विकीसत्त्वसंस्थाच ॥ राजसीचरजोवृता ॥ ११ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ म ११

तामसीचतमोयुक्ता ॥ गुणत्रयविभाविनी ॥ ॥
अव्यक्ताव्यक्तरूपा च ॥ वेदविद्या च शाम्भवी ॥ १
शम्भकल्याणिनीकल्पा ॥ मनःसंकल्पसंतति ः
सर्वलोकमयीशक्तिः ॥ सर्वश्रवणगोचरा ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सर्वज्ञानवतीवेत्ता ॥ सर्वतत्त्वावबोधिका
जाग्रतीचसुषुप्तिश्च ॥ स्वप्नावस्थातुरीयका
त्वरामेरुगानिर्मेरा ॥ मदिरामोहमोहिनी ॥ ५
पानभूमिःपानपात्रा ॥ पानदानकरोद्यता ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ. सं. ४४

आह्वर्णीहृणानेत्रा च ॥ किंचिदव्यक्तभाषिणी ॥
आशाश्चावदीना च ॥ रत्नारीतिनहजिता ॥
नागवल्ली नागकन्या ॥ भोगिनी भोगवल्लभा
सर्वशास्त्रवती विद्या ॥ स्मृतिर्धर्मवादिनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रुतिः स्मृतिधराज्येष्ठा ॥ श्रेष्ठापातालवासिनी
मीमांसा तर्कविद्या च ॥ सुभक्तिर्भक्तवत्सला ॥ सु
नाभिर्यातनाजाति ॥ गंभीराभाववर्जिता ॥ ना
गपाशधरामूर्ति ॥ रगाधानागकुंडला ॥ ११ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ॰
स॰
६५

मूचक्राचक्रमध्यस्था ॥ चक्रकोणनिवासि-
नी ॥ सर्वमंत्रमयी विद्या ॥ सर्वमंत्राक्षरावलिः ॥
मधुस्रवास्रवंतीच ॥ भ्रामरीभ्रमरालका ॥ १
मातृमंडलमध्यस्था ॥ मातृमंडलवासिनी ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऊमारजननीक्रा ॥ मृत्युभीज्वरनाशिनी ॥
अतीताविद्यमानाच ॥ भाविनीप्रीतिमंजरी ॥
सर्वसौख्यवतीयुक्ति ॥ राहारपरिणामिनी ॥
निधानंपंचभूतानां ॥ भवसागरतारिणी ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भत ४४

अक्रूरावग्रहवती॥ विग्रहाग्रहवर्जिता॥ ५॥ रो
हिणीभूमिगर्भाच॥ कालघ्नःकालवर्तिनी॥
कलंकरहितानारी॥ चतुःषष्टिविभाविनी॥
जीर्णाचजीर्णवस्त्राच॥ नूतनानववल्लभा॥ ६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रुजगानियतिः प्रीती ॥ बलिरागविवर्धिनी ॥ पं
ववानगतिर्भिन्ना ॥ पंचक्लेशापायधरा ॥ पं
चपितवती पंक्तिः ॥ पंचस्थानविभाविनी ॥
ऋतमती कामवती ॥ बहिःप्रश्नविनीऽरहा ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
म
५

रजःशुक्रधराशक्ति॥जरायुगर्भधारिणी॥।
त्रिकालज्ञात्रिलिंगात्रि॥मूर्तिस्त्रिपुरेश्वरी॥।
अरागाशिवतत्वाच॥कामतत्वानुरागिनी॥।
प्राच्यवाचीप्रतीचीदि॥गुदीचीविदिशिदिशा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अहंकृतिरहंकारा ॥ बलमायाबलिप्रिया ॥ स्रु
क्स्रुवासामिधेनीव ॥ सश्रद्धाश्राद्धदेवता ॥
मातामातामहीतृप्तिः ॥ पितृमातापितामही
स्नुषादौहित्रिणीपुत्री ॥ पौत्रीनप्त्रीशिशुःप्रिया

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
४५

स्तनरास्तनपाराव ॥ विश्वयोनिःस्तनंधयी ॥ शिशुंके

गधरादेला ॥ देलाक्रीशभिनेहिनी ॥ उर्वशीकदलीके

का ॥ विशिखाशिखिवर्नेकी ॥ खेद्दंगाधारीगारिवद्दा ॥

भलन्नणा ॥

वागांशलावरनिनी ॥ लस्यधामिकरालस्या ॥ लस्याचड

वर्त्तिनीस्वंपथाचारा॥परिखोवावखतिर्हतिः॥
प्राकारवलयावेला॥मर्यादाचमहोदधौ॥
पोषिणीशोषिणीशक्ति॥दीर्घकेशीसुलोम
शा॥ललितामांसलातन्वी॥वेदवेदांगधारि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
स
३५

णो॥ नमोस्कारनमत्ताव॥ नवडंडशास्थियभ्रघणा
श्रन्नक्कीडारनाधारी॥ धारिकाशुकभाषिणी
धाम्बरीगारुडीविद्या॥ वारुणीवरुणाचिंता
वाराहीनाराइहस्ताव॥ दंष्ट्रोद्भनवसन्धरा॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मीनमूर्तिधरामूर्ता॥वदन्याप्रतिमाश्रया॥श्री
मूर्तिर्निधीश्चाच॥सालिग्रामशिलाशुचिः॥
प्राकृतादेशभाषाच॥गाथागीतिःप्रहेलिका
इडाचपिंगलापिंगा॥सुषुम्णासूर्यवाहिनी

भ स ५

शशिस्ववाचनालस्या ॥ काकिनी शृतजीविनी

श्राद्धरूपा बहुरूपा ॥ लब्धरूपा गृहःस्थिता ॥ स्थाव

रा जंगमा देवी ॥ कृतकर्मफलप्रदा ॥ विषयाक्रां

तदेहा च ॥ निर्विशेषा जितेंद्रिया ॥ विश्वरूपा वि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ज्ञानदा ॥ परंब्रह्मप्रबोधिनी ॥ निर्विकाराचनि
र्वैरा ॥ विरतिः सत्त्ववर्धिनी ॥ प्रकृष्टाज्ञानभिन्ना:
व ॥ भ्रांतिः कैवल्यदायिनी ॥ विविक्तसेविनी प्रह्वा
जनयित्री बहुशक्तिः ॥ निरीहा च समस्तेशा ॥ सर्वे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ
म
धा

वैलोकैककेसेविना॥ सेवासेवाप्रियासेव्या॥ से
वाफलविवर्धिनी॥ कलौकाल्किप्रियाकाली
दुष्टम्लेछविनाशिनी॥ प्रत्यंचाधगुणोघहिः॥ ख
ड्गधाराउग्रानतिः॥ प्रभवस्तुतिश्चवल्गाच॥ स्थिताः

स्मन्नवारणे || वीरभूवीरमानाय || वीरस्तवीः
रंतेरिती || जयश्रीजेयरीनाय || जयराजजयवा
पिनी || सौभाग्यप्रभाकारा || सर्वसौभाग्यवा
सिनी || क्षेमंकरी सिद्धिरूपा || सत्कीर्तिः पथिवे

भ. स. ५२

वता ॥ सर्वतीर्थमयीमूर्तिः ॥ सर्वदेवमयीशुभा ॥ स

र्वसिद्धिप्रदाशक्तिः ॥ सर्वमंगलमंगला ॥ १ ॥

ॐ गांग्येसहस्रनामेद ॥ मेबाधाहृद्भाषिते ॥

वक्ष्वेर्गश्वेदमत्यं ॥ नैदिकेनप्रकाशितं ॥ नाम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

परतरो मंत्रो ॥ नातःपरतरः स्तवः ॥ नातःपर

तरा विद्या ॥ तीर्थं नातःपरं परम ॥ ये धन्याः कृ

तपुण्यास्ते ॥ नपवश्चविघ्नजिताः ॥ एकभावे

नुरागानित्यं ॥ ये पठंति महेश्वरीम ॥ देवतानां दे

भ
म॰
५१

वताया ॥ ब्रह्माद्यैर्याविशूनिता ॥ भूयात्सावरदा
लोके ॥ साधूनांविश्वमंगला ॥ एतामेवसुरारा
ध्या ॥ विद्यांत्रिपुरभैरवी ॥ त्रैलोक्यमोहनंरूप ॥
माकार्षीद्भगवान्हरिः ॥ इतिश्रीरुद्रयामलेतंत्रे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नंदिकेश्वरसंवादे ॥ भवानीनामसहस्रस्तवरा
जः समाप्तः ॥ १ ॥ ॐ जप्तं पापहरं ज्ञेतं बलकरं
संस्मृतितं श्रीकरं ॥ ध्यातं मानकरं ज्ञेतं धनकरं
संभाषितं सिद्धिदं ॥ गीतं खेदरी वांछितं प्रतत्रे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भ. म. ५५

नेपाठपमृद्धये ॥ भक्तानांभवभीतिभंजनकर

मित्रष्टिरेपात्मनः ॥ ॐ अनेनमंत्रपाठेन ॥ भग

वान्श्रीमा ॥ कामा ॥ अनेकदेव्यामहत्वनाम्ना ॥

भवान्या ॥ प्रीयंतां ॥ प्रीमाःमेव ॥ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Complete
Incomplete
Bundle No.
No. of Folios 14

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ नमः सूर्याय ॥ ॐ कश्यपमारिच्यगोत्रेन ॥ अपाति
हेह्लिनोत्रम ॥ पतनेश्रूहिविष्टंद ॥ अणधेया
र्णोतव ॥ सूर्मेतहवाव ॥ इदमेवअगाहहः ॥ श्रो
त्रिवकुंभगारधर ॥ अणाय्यशिरसादेव ॥ मजे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री हि १

नेन महात्मना ॥ कुरुक्षेत्रे धर्मक्षेत्रे ॥ विनाते भा
रते रणे ॥ स्थिरकामे समागत्य ॥ ह्यादिसे१
लोकस्य हितम् ॥ कृत्वांजलिपुटो भूत्वा ॥ पा
र्थः प्रोवाच केशवं ॥ श्री अर्जुन उवाच ॥ हृषी

भक्तिं करिष्यामि॥ कथं सर्वं प्रभजेयत्॥ नरहरे
श्रोतुमिच्छामि॥ त्वयमादेनमाधव॥ श्रीभगवा
नुवाच॥ अस्माकं यत्त्वयापृष्टं॥ मेकचित्तो भवा
धुना॥ नरहरेस्तं प्रवक्ष्यामि॥ त्वादिमध्यावसाना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गा मा २

के॥ अर्जुन उवाच॥ ॐ नारायणं महाश्रेष्ठ॥ पृच्छामि
त्वां महायशाः॥ कथमाहात्म्यसंघेत॥ सुप्रतिष्ठेन
सनातने॥ श्रीभगवानुवाच॥ साधु पार्थ महा-
बाहो॥ बुद्धिमानसि पाण्डव॥ यन्मां पृच्छसि १

सुप्रस्थाने ॥ नत्यविद्रे विभावसोः ॥ सर्वमंगल
मंगल्ये ॥ सर्वपापप्रणाशने ॥ सर्वमेगोपशाम
ने ॥ आयुवर्धनसत्तमे ॥ अमित्रदमने पार्थे ॥ मे
ग्रामेजयवर्धने ॥ वर्धने धनधान्याना ॥ आयुरित्व

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री
सू
४

त्वदर्थं श्रुणु ॥ यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो ॥ मुच्यते नात्र
संशयः ॥ त्रिषु लोकेषु विख्यातं ॥ निःश्रेयसक
रं परं ॥ देवदेवं नमस्कृत्य ॥ ज्ञानरूप्याय ववार्जंत
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ॥ सूर्यमाराधयेत्सदा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अस्य श्री आदित्यहृदयस्तोत्रमंत्रस्य ॥ श्रीकृष्ण
ऋषिः ॥ श्रीसूर्यनारायणो देवता ॥ अनुष्टुप्छंदः
हरितहयरथं दिवाकरं ॥ द्युमणिरिति बीजं ॥ १
जितवैश्वानरज्ञानवेदसमहतिशक्तिः ॥ सर्वदे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री ६४

गतिवारणार्थे ॥ यथाभीष्टसिद्ध्यर्थे ॥ पादौ विनि-
योगः ॥ अंकेन शीर्षे विन्यस्य ॥ ललाटे तु रविं न्यसेत
विन्यसेत्तेत्रयोस्तथे ॥ कर्णयोस्तु दिवाकरं ॥ नासि
कायां न्यसेद्भानुं ॥ मुखे वै भास्करं न्यसेत ॥ पर्जन्यो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मोहयोस्त्रैव ॥ तीनांत्रिहांतोत्यमेत ॥ सववांरे
नमेकेटे ॥ क्रूटयोत्तिमतेजमे ॥ बाहूलक्षवां
वैव ॥ मित्रैवे हहतोत्यमेत ॥ वाहतांटवितोटः १
ले ॥ लक्षारेवामतः केरे ॥ हलाउसकराः पाव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री ५८

हृदयं पातु भानुमान् ॥ उदरं तु यमे विधाता ॥ प्रा
टिं च नाभिमण्डले ॥ कंट्यां तु विन्यसेत् हंसं ॥ ऊ
रुंरुर्वोस्तु विन्यसेत् ॥ जानुनोस्तु गोपतिं न्यसेत्
सवितारं तु जंघयोः ॥ पादयोश्च विवस्वंतं ॥

गुल्फयोस्तु दिवाकरे ॥ बाल्यतस्त्वतमो ध्वंसे ॥ भ
गमध्येनतं न्यसेत ॥ सर्वांगे ङमहस्तोष्ठ ॥ रिवि
दिवाविंगं न्यसेत ॥ पष्ठ आदित्य विन्यासो ॥ देवा
नामपि दुर्लभः ॥ न्यसेच्च नयात्वयरं मे ॥ मयात्रिप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री दि ५

रमांगतिः ॥ कामक्रोधकृतात्पापात् ॥ मुच्यते ना
त्र संशयः ॥ सर्वत्रास्य भयं नैव ॥ संग्रामेषु पथिष्व
पि ॥ विषमे संकटकालेषु ॥ तथा चौरसमागमे
विशेषेणैव जपेद्यस्तु ॥ महापातकनाशनम् ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विस्फोटकमसूरनादि ॥ स्त्रीबन्धनमसूडवः ॥ १

शिरोरोगनेत्ररोगाणि ॥ सर्वव्याधयएवच ॥ क्षय

व्याधिस्तथाकेतु ॥ रोगाश्चविविधास्तथा ॥ नप

मानस्यनसंपति ॥ भक्त्यामेश्रुणुतोऽर्जुन ॥ श्रादि

स्यहृदयेषु णाय ॥ मादित्यमुवनेश्वरः ॥ आदित्य
नोपरोदेवो ॥ ह्यादित्यः परमेश्वरः ॥ आदित्यमा
र्चयेद्ब्रह्मा ॥ चादित्यमर्चयेन्न शिवः ॥ यदादित्यम
र्चयेत्तेजो ॥ मम तेजस्तेर्जेन ॥ ॥ ॥ त्रिमनध्या

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सर्वैर्येनस्तुये ॥ स्मरेद्रत्न्याव्रयोनरः ॥ नमपश्य
तिरातिंद्यं ॥ पार्थजन्मानिजन्मनि ॥ पतत्रेकथि
तेपार्थ ॥ मादित्यहृदयंमया ॥ यज्ञुलाश्वयतेपा
पा ॥ स्वर्गेलोकेचगच्छति ॥ ॐ नमःसूर्याय ॥ ॐ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री ५८

नमो भगवते आदित्याय ॥ ॐ आदित्यः सविता
सूर्यः ॥ खगा पूषा गभस्तिमान् ॥ सुवर्णः स्फटि
को भानुः ॥ स्फुरितो विश्वतापनः ॥ हिरण्यगर्भस्त्रि
शिराः ॥ तपनो भास्करो रविः ॥ मार्तण्डो गोपतिः श्रीमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कृतज्ञश्च प्रतापवान् ॥ नमिस्त्वष्टा भगो हंसो ॥ ना

सत्यश्च तमोनुदः ॥ शुद्धो विरोचनः केशी ॥ सहस्रां

शुः महाप्रभुः ॥ विवस्वान्पूषणो मृत्यु ॥ मिहिरो जाम

दग्न्यजित ॥ घर्मरश्मिः पतंगश्च ॥ शरण्यो मित्रहातन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री ६५

पः ॥ उर्विद्रेयगतिः सूत्रो ॥ ज्योतीरूपो महायशाः
शाम्भ स्विद्रोगादेधोमेधा ॥ हव्यकव्यप्रदायकः
श्रेष्ठमानउत्तमो देव ॥ ऋग्यजुःसामपवच ॥ ऋ
रिटश्वक्तमोहारः ॥ सप्तसप्तिर्मेरी विमान ॥ श्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्निगर्भो दितेः पुत्रो ॥ विधुस्तिमिरनाशनः ॥ शुभा
विश्वंभरो मित्रः ॥ सुवर्णः सुप्रतापवान ॥ आतपी
मंडली भास्वो ॥ तपनः सर्वतापनः ॥ कृतविश्वो
महातेजाः ॥ सर्वरत्नमयोद्भवः ॥ अक्षरश्वानरश्चै

श्री
सू
॥

व॥ प्रभाकरदिवाकरः॥ चेद्रश्वेङ्गागदःसोमा
हव्यकव्यफलार्पणाः॥ श्रेंगारकोंगसेगाली॥ व
क्रोंगश्वांगवर्द्धनः॥ त्रेलोत्रलामनोबुद्धि॥ त्रला
माबहिर्वर्धनः॥ बृहद्भानुबृहद्भासो॥ बृहद्धामः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बृहस्पतिः ॥ शुक्राय वः शुक्रो देवताश्च ॥ शुक्रो गः
शुक्रभृगवाः ॥ शनिर्मे शनि रूपश्च ॥ शनैर्गमन
न्तयः ॥ अनादि रादि रूपश्च ॥ आदित्यो दिक्पति
र्धमः ॥ भानुर्मान्भानु रूपश्च ॥ हभोनुदीप्तिभानुर्भा

श्री सू ॥

न॥ धूम्रकेतवे महाकेतवे नः॥ सर्वकेतवे रवञन्नमः॥
नमः पूर्वायगिरये॥ दक्षिणायघनमोनमः॥ उ
दीचेवतनमोनित्यं॥ पश्चिमायघनमोनमः॥ नमो
नमः सहस्रांशो॥ आदित्यायघनमोनमः॥ नमःप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घप्रबोधाय ॥ नमो ध्यात्रिरूपेवे नमः ॥ ज्योतिषामे
नमस्तुभ्यं ॥ ज्ञानाकोय नमो नमः ॥ प्रदीप्ताय प्रग
ल्भाय ॥ प्रगीताय नमो नमः ॥ नमस्ते होत्रपतये
पृथिवीपतये नमः ॥ नमस्काराय वषट्काराय ॥ स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्र
६२

ंयज्ञनमोस्तुते ॥ ऋग्वेदादिपयजुर्वेद ॥ सामवेद
नमोस्तुते ॥ नमोहाटकवर्णाय ॥ भास्करायत
मोनमः ॥ जयायजयभद्राय ॥ हरिदश्वायन
तेनमः ॥ ॥ ॥ दिव्यायदिव्यरूपाय ॥ ग्रहाणांप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न्येनमः ॥ नमः सक्तार्तिघेनभ्यो ॥ जलाञ्जलञ्जला
त्मने ॥ नमो वैकल्यनाशाय ॥ नमस्तेस्तिरिख्यवत्व
ये ॥ त्वं ज्योतिस्त्वं द्युतिर्ब्रह्मा ॥ त्वं विष्णुस्त्वं प्रजापतिः
त्वमेव कह्रो हृद्धात्मा ॥ वाञ्छितानि च मे वहि ॥ यो

ग्रा ल ५५

जनानांसहस्रेद्वे॥द्वेशतेद्वेचयोजने॥एकेन
निमिषार्धेन॥क्रममाणनमोस्तुते॥नगतिर्यै
जनालद्यं॥सहस्राणिचसप्ततिः॥यावत्त्वघ
टिकामात्रं॥तावच्चलतिभास्करः॥अयनस्वन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मल्लभ्यं ॥ ष्टष्ट्रस्त्रनमो नमः ॥ पार्श्वेत्रस्त्रनमः
ल्भ्यं ॥ नमोल्लर्यंमवेंग ॥ नमः स्तगारिहैंव ॥ मो
मह्रर्योग्रिवट्रेष ॥ नमोवेवेतवेधाय ॥ मर्वंमेत्र
मयायव ॥ स्रत्वामावमामेत्र ॥ मर्योवैफाल्ल ॥

ोतथा ॥ चैत्रेमासेतवेदांगो ॥ वैशाखेतपनः
स्मृतः ॥ ज्येष्ठेमासेउपेंद्रस्तु ॥ आषाढेतपनेरविः
गभस्तिश्रावणेमासि ॥ यमोभाद्रपदेतथा ॥
आश्विनेस्वर्णरेतास्तु ॥ कार्तिकेचदिवाकरः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मित्रोमार्गशिरोमासि॥ पौषेविष्णुःसनातनः॥ इ
त्येतेद्वादशादित्याः॥ काश्यपेयाःप्रकीर्तिताः॥ उ
ग्ररूपामहात्मानः॥ तपंतेविश्वरूपिणः॥ एकधा
दशधाचैव॥ शतधाचसहस्रधा॥ तपंतिविश्व

श्री रु ५

रूपाणि ॥ महांतिबहूनिच ॥ पश्यविष्णुंशिवंचै
व ॥ ब्रह्माचैवप्रजापतिः ॥ महेंद्रंचैवकालश्च
धर्मोवकर्माण्येवच ॥ ॥ नक्षत्रग्रहताराणां ॥ अ
धिपोविश्वभावनः ॥ वायुरग्निर्धनाध्यक्षः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कृतः कर्त्ता सर्वप्रभुः ॥ एष देवोहिदेवानां ॥ मेह

ता रत्नकमलस्था ॥ एष लोकात्रलोकस्य ॥ समही:

पामसागरः ॥ एष वैसमसपाताल ॥ दैत्यदानवरा

क्षसाः ॥ एष धाताविधाताच ॥ वीजेदेवेषनागानि :

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पषसूर्वप्रजानित्यं॥ संवर्धयतिरश्मिभिः॥ प
षपदन्तः स्वधा स्वाहा॥ ह्रीं श्रीं स्त्रं पुरुषोत्तमः॥ प
ष सर्वात्मको देवः॥ सूक्ष्मोऽव्यक्तः सनातनः॥ ईश्व
रः सर्वभूतात्मा॥ परमेष्ठी प्रजापतिः॥ कालात्मा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सर्वभूतात्मा॥ विश्वात्मा विश्वतोमुखः॥ जन्म
मृत्युजराव्याधि॥ संसारभयनाशनः॥ दारिद्य
व्यसनध्वंसी॥ श्रीमान्यात दिवाकरः॥ गभस्ति
हस्तोब्राह्मणयः॥ सर्वदेवनमस्कृतः॥ आयुरारो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आ ६९

गयैश्च वंद्यं ॥ नरो विरतिबंधनानं ॥ लोकसा-
क्षी त्रिलोकेश ॥ हर्ता कर्ता त्वमीश्वरः ॥ तपनः प-
वनश्चैव ॥ शुचिः सप्ताश्ववाहनः ॥ विकर्तनो विव-
स्वांश्च ॥ मार्तंडो भास्करो रविः ॥ लोकप्रकाशक

स्तव ॥ श्रीमान्सर्वगुह्येश्वरः ॥ इत्येतैर्नामभिः प्रा
ह्ना ॥ प्रातिरंयस्तौतिनियःसदा ॥ ज्ञानकल्याणकौंते
य ॥ तस्यरोगभयंकुतः ॥ पानकांक्षच्युतेनार्थे ॥ १
व्याधिभयस्तुनमेप्रायः ॥ एकसंध्यंद्विसंध्यंव ॥ सर्व

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री रु ८

पापैः प्रमुच्यते ॥ त्रिसंध्ये जपमानस्तु ॥ मुच्येतबः
परमं पदम् ॥ यद्ब्रह्मा कृतं पापं ॥ तद्ब्रह्मा प्रति
मुच्यते ॥ यद्राज्ञा कृतं पापं ॥ तद्राज्ञा प्रतिमु
च्यते ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ दद्रुस्फाटिकजहानि ॥ मंडलानि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विचर्विका॥ येचान्येदुष्टरोगाश्च॥ ज्वरातीसाव।
कारदयः॥ अपमानस्यनश्यंपति॥ जीवेच्चशरदः।
शतं॥ मेवन्सेरणमरणे॥ परानस्यध्रुवंभवेत॥
श्रीधीर्णपयतिस्त्राया॥ महोरागेंधनंजय॥ य

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री भ ११८

स्त्विदं पठते भक्त्या ॥ चोरैर्भीतो महात्मनः ॥ ज्ञातः
स्नानेन कृते पार्थ ॥ एकादशीकृतमानसः ॥ स्वर्वर्णो
वान्भवति ॥ न वैधव्यस्तु प्रजायते ॥ पुत्रवान्धन
नसंपन्नो ॥ जायते चान्यजन्मतस्था ॥ ॥ यथाश्वल

भेते नित्यं ॥ न च स्वर्गान्निवर्तते ॥ आदित्य हृदयं

पुण्यं ॥ यः पठेत्सुसमाहितः ॥ धृणासद्ध शुक्लाते पा-

पा ॥ कृतघ्नो गोघ्न पच वच ॥ यः हं सूर्णयान्नित्यं ॥

जपेद्वापि समाहितः ॥ सर्वपापविशुद्धात्मा ॥ स्व

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री सू र

ये लोके महीयन्ते ॥ अक्षतोल भन्तेऽक्षतान् ॥ धनो

र्थी धनमाप्नुयात् ॥ रोगैः सर्वैर्विमुच्येत ॥ रोगी यः

पठेन्नरः ॥ यस्त्वादित्यदिने पार्थ ॥ नाभिमात्रे

जले स्थिता ॥ उदयाचलमारूढं ॥ भास्करं प्रणः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नःस्थितः ॥ जपते मानवो भक्त्या ॥ शृणुयाद्वा स

माहितः ॥ सयाति परमे स्थाने ॥ यत्र देवो दिवा।

करः ॥ अमित्रदर्शनो नीकृत्यंया ॥ यदाकर्तें समावे

न ॥ नरराश्रनिक्रुतिं कृत्वा ॥ शाङ्कोश्वरणपालन॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आ हृ ११

श्राक्रम्य वामपादेन ॥ आदित्यहृदयं जपेत् ॥ ॐ
ॐ ह्रिं माली स्वाहा ॥ ॐ ह्रिं मालीकाय स्वाहा ॥ ॐ ना
लीढः स्वाहा ॥ ॐ त्रिभिस्त्वरोगी भवति ॥ ज्वरी भवति
पंचभिः ॥ जपेत्सप्तसप्तभिः पार्थ ॥ गतं मे नत्रमाविशेत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गात्तेनाभिभूतस्य ॥ विकारैश्चावपार्थिव ॥
गायतेनृत्यतेनच ॥ आस्फोटयतिधावति ॥ शि
वाहतेवक्रहते ॥ हसतेक्रंदतेपुनः ॥ एवंसंपी
डितेपार्थ ॥ यद्यपिस्यान्महेश्वरः ॥ किंपुनर्मात्र

भ्र गीं ५२

घः कश्चि॥ द्वोचाचारविवर्जितः॥ पीडितस्य
तंसंदेहो॥ ज्वरोभवतिदारुणः॥ यदावारग्रहे
नस्य॥ कर्तुमिच्छेच्छुभेनरः॥ नरोसलिलमादा
य॥ जपेन्मंत्रमिमंश्रेष्ठः॥ नमोभगवतेतुभ्य॥ प

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मादित्यायनमोनमः॥ किंतुनजपेनैनित्यं॥ सा
धकोविधिपूर्वकं॥ स्नापयेत्तेनमंत्रेण॥ शुभेभा
वतिनायथा॥ ॐनमःआदित्याय॥ जयभद्राय॥
हरिस्नापयेत॥ नमइतिस्नापयेत्॥ अन्यथावा।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री ह ५५

भवेद्देहो ॥ दृश्यते नात्र संशयः ॥ त्वया मे ह्यवि

लाः प्रोक्ता ॥ शृणुं चैव निबोध मे ॥ अष्टपत्रे लि

खेत्पद्मे ॥ लिप्ता गोमयमंडले ॥ अत्र स्थाने भवेच्छि

व ॥ क्रमेणैव तु मर्दयेत ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ह्रीङ्कारमस्य भारत ॥ पूर्वे पत्रे लिखेन्नरः ॥ मा
ग्रेष्ठां तथा विंद्यमेतत् ॥ याम्यां दिशि विवस्वंतं ॥ नै
ऋंत्यां तु भौंत्यमेतत् ॥ वारुण्यां मरुतां विद्यात् ॥ वाय
व्यां मित्रमेव च ॥ आदित्यमुत्तरे पत्रे ॥ ऐशान्यां वि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्मेवच ॥ मध्येनभास्करंविद्या ॥ पूर्वेमादिक्र
मेणात ॥ अग्रहणंभवत्येव ॥ क्रमेणोवचनमवे
घेत ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामि ॥ षडिकामस्यभाव
त ॥ महातेजसमभ्यतंते ॥ प्रणघेनकृतांजलिः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सकेसराणिपद्मानि ॥ करवीराणिपंञ्च ॥ तिल
तेऽञ्जलेसपुष्कं ॥ ऊशागोधाटकेनव ॥ रक्तंचंदन-
मिश्राणि ॥ कृष्णावैताम्रभाजने ॥ पुष्पाणिशिवसि
तनपात्रे ॥ ज्ञात्वाऽभ्योधराणीतले ॥ मंत्रज्ञापीग-

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ केशा ॥ ट्घाट्घैंगभक्तिने ॥ ॐ ब्रह्मेविद्याकि
लकिलसर्वार्थसाधनीयायस्वाहा ॥ ॐ ह्रांह्रीं
ह्रूंसः सूर्यायस्वाहा ॥ ॐ विवःलोकायस्रर्थश्रुते
येस्वाहा ॥ ॐ ह्रांह्रींह्रूंसः सूर्यायनमः ॥ ॐ ह्रां १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ह्रौं हं सः सूर्याय नमः स्वाहा ॥ गं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः स्वलो
काय सर्वं भूतये स्वाहा ॥ मानोऽर्घ स्वाहा ॥ ॐ न
मोस्तु सूर्याय नमोस्तु भानवे ॥ नमोस्तु वैश्वाना
रस्तानवेऽस्तु ते ॥ त्वमेव वाच्यं परिगृहाण गृहाण ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री रु द्र

मोदकवैदेवेश्वरानमोनमस्ते॥ ॐनमोभगवतेरु।

मेय॥ नमस्तेज्ञानवेदसे॥ दत्तमक्षौमघाभानो॥

रुद्राणांत्वंनमोस्तुते॥ पहिस्वर्गमहहंसोधो॥ ने-

नेगोघ्रीन्नगात्यते॥ अत्रकमप्यस्वमोभक्त्या॥ रट

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हाणार्घ्यं दिवाकर ॥ ॐ नमो भगवते सूर्याय सु
लयतेजसे नमः ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ॐ आदित्याय
नमः ॥ ॐ आदित्यं च शिवं विद्यात् ॥ शिवं आदित्य
रूपिणं ॥ उभयोरंतरं नास्ति ॥ आदित्यस्य शिवस्य

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रा सू २२

व॥ग्रतोवेघ्निमदैकात्वं॥ग्रहेषुचदिवाकरे॥उ

दयेब्रह्मरूपाय॥मध्याह्नेचमहेश्वरः॥साया

ह्नेशिवंविद्य॥त्रिमूर्तिर्दीमरीधिनिः॥ॐह्रां

ह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रःदिवाकरायनमः॥ॐह्रांह्रींह्रूं।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ह्रीं क्लीं ह्रूं ॥ सूर्याय आदित्याय नमः ॥ ॐ नमो

भगवते ॥ स्वतेजसे ॥ जितवैश्वानरजातवेदसे ॥

ममेतनमख्ये श्रति रक्षा रक्षा ॥ देवादिदेवप्रान।

मोस्तुतभ्यं ॥ ॐ नमो भगवते तुभ्यं ॥ विवस्वते जात

आ
हृ
८८

वेदसे ॥ नमस्ते वांछितरहता रहता ॥ देवदेव नमोस्तु
नते ॥ हिमघ्नाय नमोंघ्नाय ॥ तमोघ्नाय नमो नमः ॥
कृतघ्नाय देवाय ॥ नमस्सूर्यात्मने नमः ॥ ॐ ऐं श्री
ह्रीं क्लीं हरिनहृयरथं ॥ दिवाकरं मम सर्वे हृदयेन

मोनमः॥ॐह्रीतिहृदयरथ्येदिवाकरं॥कनकमयो
भुजरोगपिंजरं॥प्रतिदिनमुदितेनवेनवे॥धाव
गास्रुपैमिहिराणयेनमे॥नमाशत्रुभ्योभयेजात्र॥
नव्याधिभ्योभयंभवेत॥ननागेभ्योभयंचैव॥न

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री गं २५

वभ्रूनभयंभवेन॥ उह्रभ्योनभयंचैव॥ पार्थिवेभ्य

लैयवव॥ उर्गोनिर्नभवेतनस्य॥ भूजपालभतेशि।

भुत॥ मिड्डिकामोलभेतिमिंडि॥ श्वकामाल्मनाव

हूत॥ पतस्याठातकैंनेघ॥ भक्तिश्रेकेनवेनमा॥।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्वमेधसहस्रस्य ॥ वाजपेयशतानिच ॥ कन्या
कोटिसहस्रस्य ॥ यत्फलंतत्समाप्नुयात् ॥ इदमा
दित्यहृदयं ॥ योधीतेसततंनरः ॥ सर्वपापविशु
द्धात्मा ॥ सूर्यलोकेमहीयते ॥ नास्त्यादित्यसमो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देवो॥ नान्यादित्यसमद्युतिः॥ अन्यतो भगवा-
न्विष्णो॥ येन विश्वं प्रबुध्यते॥ गवां कोटिसहस्रा-
णां॥ यत्फलं समुपार्जितं॥ तत्फलं लभते नित्यं॥
शोतानाम्नास्तौति नियो रविं॥ योधीते सूर्यहृदयं॥ सा-

फलेनकलेभवेत् ॥ ब्रह्मानोब्राह्मणानोच ॥ लि
ङ्गिनायःसमर्पयेत् ॥ ब्रह्मलोकेऋषीणांच ॥ गेहे
वसतिसौख्यवान् ॥ जातिस्मरत्वमाप्नोति ॥ शूद्रा
न्नानांचसंप्रायः ॥ अन्नायलोकउपपावनाय ॥ भूः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री हे॰ ३१

नात्मने गोपतये हृषाय ॥ सूर्याय सर्गप्रलया
दिहेतवे ॥ नमो महाकारुणिकोत्तमाय ॥ विव
स्वेतानभुवैंनतात्मने ॥ जनप्रदीपाय जगद्धितै
षिणे ॥ स्वयंभुवे तातन महस्रचक्षुषे ॥ सुरोत्तमाय।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सितेतेसेनमः ॥ नमःसवित्रेजगदेकचक्षुषे
जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ॥ त्रयीमयायत्रि
गुणात्मधारिणे ॥ विरिंचिनारायणशंकरात्म
ने ॥ यस्योदयेनेहजगत्प्रबुध्यते ॥ प्रवर्ततेचाखि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री ह ११

लकर्मसिद्धये ॥ ब्रह्मेंद्रनारायणरुद्रवंदितः ॥

मनःस्मरायतशानमंगलंरविः ॥ ॐनमोस्त्वना

येयसहस्रमूर्तयेसहस्रमेध्याउपमेभवात्म

ने ॥ सहस्रयोगाड्वभूतभाविने ॥ सहस्रकोटी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घुणाधारिणोनमः॥ यन्मंडलंदीप्तकरंपवाध्यं
मत्नप्रभीतीव्रमनादिरूपं॥ दारिद्रदुःखक्षय
कारणंच॥ पुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यं॥ यन्मं
डलंदेवगणोशपूज्यं॥ विप्रस्तुतंनिस्वलभक्ति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सू ह २२

गुरूणा ॥ तं देवदेवं प्रणमामि सूर्यं ॥ अनादिमांत

स्वविन्दवीर्णं ॥ यन्मंडले ज्ञानमघात्रगम्यं ॥ त्रै

लोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपं ॥ तं देवदेवं प्रणमा

मि सूर्यं ॥ अनादिमांतं तमसि बिन्दवीर्णं ॥ यन्मं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इलेगुरुमतिप्रबोधे॥ धर्मस्यवृद्धिंकुरुतेजना

र्थ॥ यत्कस्यकस्यविनयकारणंच॥ उन्नातमो

तमस्यविनिवैरेणं॥ यत्रेइलेसर्वजनेषुसुष्ठुं॥

ज्योतिःप्रकुर्यादिहमर्त्यलोके॥ यत्कस्यकाला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री सू ३४

रिमनादिरूपं ॥ पुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यं ॥ ।
यन्मंडलेविष्णुचतुर्मुखाख्यं ॥ यदक्षरंपापह ।
रंजनानां ॥ यत्कर्मकर्मक्षयकारणंच ॥ ।
पुनातुमांतत्सवितुर्वरेण्यं ॥ यन्मंडलेवेद

विद्वेदवदेति ॥ त्वमर्थमर्त्यास्त्वमसिज्ञमंगाः

यद्योगिनो योगरथस्त्वमसिज्ञः ॥ ज्ञानात्मनोत।

स्मिन्निर्वेदीरांयं ॥ यन्मंडलेव्याधिविनाशहेत

यद्दारज्ञःसाममनत्वमसिद्धं ॥ आद्यर्थतेयेन।

वभूर्भुवःस्वः॥ॐनानमोनमसवितर्वरेणयम॥
ध्येयःसदासवित्रमंडलमध्यवर्ती॥नारायणः
सरसिजासनसन्निविष्टः॥केयरवालकनिक
ंडलवाल्किरीटी॥हारेहिरणामयवपुर्धृतशं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्विकाः ॥ मस्ते त्विच्चके रविमंडलेस्थिते ॥ क्रोशे
शयाक्रांतमनेनसंघते ॥ भजामिब्रुद्यानपनी
यद्रूपिणी ॥ वृंदोत्तमे भविचत्रविभूषणांबरे ॥ अप
राधाराणीनाकिं ॥ त्वमेवशरणांमम ॥ तस्मात् ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सू ९९

शुभ्रात्मप्रभावेन ॥ रत्नरत्नदिवाकर ॥ ज्ञानदे-
हप्रकाशाय ॥ ज्योतिरूपममग्रभोः ॥ सप्ताश्व-
रथवाहाय ॥ भास्कराय नमो नमः ॥ नमो धर्म-
विधानाय ॥ नमः सुकृतसाक्षिणे ॥ नमः प्रत्यक्ष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देवाय ॥ भास्कराय नमो नमः ॥ ॥ ॥ इति श्री आ
दित्यहृदयस्तोत्रं समाप्तम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बालमित्र उपनिषद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ नमो नारायणाय ॥ ॐ यस्यस्मरणमात्रेण ॥
जन्मसंसारबंधनात ॥ विमुच्यते नमस्तस्मै ॥ १
विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ १ ॥ नमः समस्तभूताना ॥ १
मादिभूताय भूभृते ॥ अनेकरूपरूपाय ॥ विष्ण

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्र १

वेप्रभविष्णवे ॥२॥ वैशंपायनउवाच ॥ श्रुत्वाधर्मा
शेषेण ॥ पावनानिचसर्वशः ॥ युधिष्ठिरःशां
तनवं ॥ पुनरेवाभ्यभाषत ॥३॥ युधिष्ठिरउवाच ॥
किमेकंदैवतंलोके ॥ किंवाप्येकंपरायणम्

स्तुवंतः कंकमर्चंतः ॥ प्राप्नुयुर्मानवाः शुभं ॥ ४ ।
कोधर्मः सर्वधर्माणां ॥ भवतः परमोमतः ॥ किं
जपन्मुच्यतेजंतु ॥ र्जन्मसंसारबंधनात ॥ ५ ॥ भी
ष्मउवाच ॥ जगत्प्रभुंदेवदेव ॥ मनंतंपुरुषोत्त

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स २

मं ॥ स्तुवन्नामसहस्रेण ॥ पुरुषः सततोत्थित
ः ॥ तमेव चार्चयन्नित्यं ॥ भक्त्या पुरुषमव्य
यं ॥ ध्यायंस्तुवन्नमस्यंश्च ॥ यजमानस्तमेव च ।
च ॥ ७ ॥ अनादिनिधनं विष्णुं ॥ सर्वलोकमहेश्व

ये ॥ लोकाख्यलेकत्ववनित्ये ॥ सर्वेडःखानिगोभः
वेत ॥ ८ ॥ ब्रह्माणे सर्वधर्मज्ञे ॥ लोकानोकीर्तिव
ईते ॥ लोकनाथे महद्भूते ॥ सर्वभूतभवोद्भवे ॥ ९ ॥
पष्ठमे सर्वधर्माणां ॥ धर्माधिकनमोमतः ॥ यद्

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
३

णुंडरीकाक्षं ॥ स्तवैर्गैर्वैन्नुतः सदा ॥ ८ ॥ परमे
योमहत्तेजः ॥ परमेयोमहत्तपः ॥ परमेयोम
हद्ब्रह्म ॥ परमेयः परायणं ॥ ९ ॥ पवित्राणांपवि
त्रंयो ॥ मंगलानांचमंगलं ॥ दैवतंदेवतानांच ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भूतानां योव्ययः पिता ॥ २ ॥ यतः सर्वाणि भूता
नि ॥ भवंत्यादि युगागमे ॥ यस्मिंश्च प्रलयं याति
पुनरेव युगक्षये ॥ ३ ॥ तस्य लोकप्रधानस्य ॥ ज
गन्नाथस्य भूपते ॥ विष्णोर्नामसहस्रं मे ॥ शृणु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म ४

पापभयापहम् ॥ ४ ॥ यानि नामानि गौणानि ॥
विख्यातानि महात्मनः ॥ ऋषिभिः परिगीता
नि ॥ तानि वक्ष्यामि भूतये ॥ ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य ॥ वे
दव्यासो महामुनिः ॥ छंदोनुष्टुप् तथा देवो ॥ भगवान्

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देवकीनंदनः ॥१॥ ॐ विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं ॥ प्र
भविष्णुं महेश्वरं ॥ अनेकरूपदैत्यांतं ॥ नमामि
पुरुषोत्तमं ॥१॥ श्रीवेदव्यास उवाच ॥ ॐ अस्य
श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमालामंत्रस्य

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
८

श्रीभगवान्वेदव्यासऋषिः ॥ अनुष्टुप्छंदः ॥१
श्रीकृष्णःपरमात्मादेवता ॥ आत्मयोनिःस्वयं
जातइतिबीजं ॥ देवकीनंदनःस्रष्टेतिशक्तिः
उद्भवःक्षोभणोदेव ॥ इतिपरमोमंत्रः ॥ शंखभृ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नंदकीचक्रीतिकीलकं ॥ त्रिसामासामगः
सामेतिकवचं ॥ शार्ङ्गधन्वागदाधरइत्यस्त्रं ॥ १
ॐविश्वंविष्णुर्वषट्कारइतिध्यानं ॥ श्रीवि
ष्णोःप्रीत्यर्थे ॥ विष्णोर्दिव्यसहस्रनामपाठेविनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मू॰ ६

योगः॥ शिरसि॥ वेदव्यासमहर्षयेनमः॥ मुखे॥
अनुष्टुप्छंदसेनमः॥ हृदि॥ श्रीकृष्णः परमा।
त्मादेवतायैनमः॥ गुह्ये॥ अशोच्यान्प्रज्ञावोभाष।
इतिबीजायनमः॥ पादयो॥ देवकीनंदनः स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ह्रीति शक्तये नमः ॥ सर्वांगे ॥ श्रांखवृंदकीवा

क्लीति कीलकाय नमः ॥ करसंपुटे ॥ श्रीकृष्णप्री

त्यर्थे पाठे विनियोगः ॥ इति ऋष्यादिन्यासः

अथ षडंगन्यासः ॥ ॐ विश्वेविश्वर्वेषट्कार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म
८

त्येगृह्याभ्यो नमः॥ अमृतांशूद्भवो भाउरीतिन

जेनीभ्यो नमः॥ ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मेति म।

ध्यमाभ्यो नमः॥ सर्वगो विंडरतो भयहृत्यना।

मिकाभ्यो नमः॥ आदित्यो ज्योतिरादित्यहृनि।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कनिष्ठिकाभ्यांनमः॥ शार्ङ्गधन्वागदाधरइति
करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः॥ ॐविश्वंविष्णुर्वष
ट्कारइतिहृदयायनमः॥ अमृतांशूद्भवोभानु
रितिशिरसेस्वाहा॥ ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मेति।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म ५

शिखायैवौषट् ॥ सुवर्णबिंदुरक्षोभ्य इतिकव
चायहुं ॥ आदित्योज्योतिरादित्य इतिनेत्रत्रयाय
वौषट् ॥ शार्ङ्गधन्वागदाधर इत्यस्त्रायफट् ॥ इति
करन्यासः ॥ श्रीकृष्णप्रीत्यर्थेपाठेविनियोगः ॥

श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामजपमहं करिष्येति

मे कल्पः ॥ श्रीकृष्णोन्नमाराधने सर्वपापक्षया

र्थे ॥ पाठे विनियोगः ॥ अथ ध्यानं ॥ हरिःओम् ॥ ॐ

शांताकारं भुजगशायनं ॥ पद्मनाभं सुरेशम्

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
५

विश्वाधारंगगनसदृशं॥मेघवर्णंशुभांगम
लक्ष्मीकांतंकमलनयनं॥योगिभिर्ध्यानग
म्यं॥वंदेविष्णुंभवभयहरं॥सर्वलोकैकना
थम॥ॐविश्वंविष्णुर्वषट्कारो॥भूतभव्य

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भवत्प्रभुः॥ भूतकृद्भूतभृद्भावो॥ भूतात्माभूतभा
वनः॥१॥ पूतात्मापरमात्माच॥ मुक्तानांपर
मागतिः॥ अव्ययःपुरुषःसाक्षीक्षेत्रज्ञोक्षरएव
च॥२॥ योगोयोगविदांनेता॥ प्रधानपुरुषेश्वर ः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
५

नारसिंहवपुः श्रीमान् ॥ केशवः पुरुषोत्तमः ॥ २२

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुः ॥ भूतादिर्निधिरव्ययः ॥

संभवो भावनो भर्ता ॥ प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ २३ ॥

स्वयंभूः शंभुरादित्यः ॥ पुष्कराक्षो महास्वनः ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अनादिनिधनोधाता॥विधाताधातुरुत्तमः॥
अप्रमेयोहृषीकेशः॥पद्मनाभोमरप्रभुः॥वि-
श्वकर्मामनुस्त्वष्टा॥स्थविष्ठःस्थविरोध्रुवः॥२५
अग्राह्यःशाश्वतःकृष्णो॥लोहिताक्षःप्रतर्दनः॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रभूतस्त्रिककुब्धाम ॥ पवित्रंमंगलंपरम् ॥ २१

ईशानःप्राणदःप्राणो ॥ ज्येष्ठःश्रेष्ठःप्रजापतिः

हिरण्यगर्भोभूगर्भो ॥ माधवोमधुसूदनः ॥ २२

ईश्वरोविक्रमीधन्वी ॥ मेधावीविक्रमःक्रमः ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अनुत्तमो दुराधर्षः ॥ कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥ सु
रेशः शरणं शर्म ॥ विश्वरेताः प्रजाभवः ॥ अ
हः संवत्सरो व्यालः ॥ प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ २५ ॥
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः ॥ सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स ११

वृषाकपिरमेयात्मा ॥ सर्वयोगविनिःसृतः ॥ ११
वसुर्वसुमनाः सत्यः ॥ समात्मा सम्मितः समः ॥
अमोघः पुंडरीकाक्षो ॥ वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ १२
रुद्रो बहुशिरा बभ्रु ॥ र्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अमृतः शाश्वतः स्थाणु || वरारोहो महातपाः || ३
सर्वगः सर्वविद्भानु || विष्वक्सेनो जनार्दनः || वे
दो वेदविदव्यंगो || वेदांगो वेदविन्कविः || ३३ ||
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो || धर्माध्यक्षः कृताकृतः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स ११

चतुरात्मा चतुर्व्यूहः ॥ चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ २४ ॥

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता ॥ सहिष्णुर्जगदादिजः ॥

अनघो विजयो जेता ॥ विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ २५

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुः ॥ अमोघः शुचिरूर्जितः ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तीन्द्रः संग्रहः सर्गो ॥ धृतात्मा नियमो यमः ॥ ३ ६
वेद्यो वैद्यः सदायोगी ॥ वीरहा माधवो मधुः ॥ अ
तीन्द्रियो महामायो ॥ महोत्साहो महाबलः ॥ ४
महाबुद्धिर्महावीर्यो ॥ महाशक्तिर्महाद्युतिः ॥
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म अनिर्देश्यवपुः श्रीमा ॥ न्नमेयात्मा महाद्रिधृक ॥

४ महेष्वासो महीभर्ता ॥ श्रीनिवासः सतांगतिः

अनिरुद्धः सुरानंदो ॥ गोविंदो गोविदांपतिः ॥ १ ९

मरीचिर्दमनो हंसः ॥ सुपर्णो भुजगोत्तमः ॥ २

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हिरण्यनाभः सुतपा ॥ पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ अ

मृत्युः सर्वदृक्सिंहः ॥ सन्धाता सन्धिमान्स्थिरः

अजो दुर्मर्षणः शास्ता ॥ विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ गु

रुर्गुरुतमो धाम ॥ सत्यः सत्यपराक्रमः ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स॰ ५५

निमिषोनिमिषःस्रग्वी॥वाचस्पतिरुदारधीः॥ ४२

अग्रणीर्ग्रामणीःश्रीमा॥न्यायोनेतासमीरणः॥

सहस्रमूर्धाविश्वात्मा॥सहस्राक्षःसहस्रपात॥३ ३

आवर्तनोनिवृत्तात्मा॥संवृतःसंप्रमर्दनः॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्रहः संवत्सरो वह्नि ॥ रनिलो धरणीधरः ॥ ४४
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा ॥ विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ॥
सत्कर्त्ता सत्कृतिः साधु ॥ र्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ ४५
असंख्येयोप्रमेयात्मा ॥ विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स ९

सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः ॥ सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ ५९
वृषाही वृषभो विष्णु ॥ र्वृषपर्वा वृषोदरः ॥ वर्ध
नो वर्द्धमानश्च ॥ विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ ५८ ॥
सुभुजो दुर्द्धरो वाग्मी ॥ महेंद्रो वसुदो वसुः ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नैकरूपो बृहद्रूपः ॥ शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ ४८

ओजस्तेजोद्युतिधरः ॥ प्रकाशात्मा प्रतापनः ॥ ऋ

द्धः स्पष्टाक्षरो मंत्र ॥ श्चंद्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ ४९ ॥

अमृतांशूद्भवो भानुः ॥ शशिबिंदुः सुरेश्वरः ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सू.
८८

औषधंजगतःसेतुः ॥ सत्यधर्मपराक्रमः ॥ ५० ॥ ५० ॥
भूतभव्यभवन्नाथः ॥ पवनःपावनोनिलः ॥ १
कामहाकामकृत्कांतः ॥ कामीकामप्रदःप्रभुः
युगादिकृद्युगावर्तो ॥ नैकमायोमहाशनः ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्रहणोव्यक्तरूपश्च ॥ सहस्रजिदनंतजित ॥ अ
ष्टोविशिष्टःशिष्टेष्टः ॥ शिखंडीनहुषोवृषः ॥
क्रोधहाक्रोधकृत्कर्ता ॥ विश्वबाहुर्महीधरः ॥ अ
च्युतःप्रथितःप्राणः ॥ प्राणदोवासवानुजः ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
१५

प्रणो लिपिर्लिपिज्ञान ॥ मंत्रमंत्रः प्रतिष्ठितः ॥ ५४

स्कंदः स्कंदधरो धुर्यो ॥ वरदो वायुवाहनः ॥ वा

सुदेवो बृहद्भ्राता ॥ नादिदेवः प्रवल्लवः ॥ ५५ ॥

अशोकस्तारणस्तारः ॥ सूरः शौरिर्जिनेश्वरः ॥

९

अनुकूलःशतावर्तो॥पद्मीपद्मनिभेक्षणः॥प
द्मनाभोरविंदाक्षः॥पद्मगर्भःशरीरभृत॥म
हर्द्धिरृद्धोवृद्धात्मा॥महाक्षोगरुडध्वजः॥अ
तुलःशरभोभीमः॥समयज्ञोहविर्हरिः॥१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स॰ ५

सर्वलक्षणलक्षण्यो ॥ लक्ष्मीवान्समितिंजयः
विक्षरो रोहितो मार्गो ॥ हेतुर्दामोदरः सहः ॥ म
हीधरो महाभागो ॥ वेगवानमिताशनः ॥ ५५
उद्भवः क्षोभणो देवः ॥ श्रीगर्भः परमेश्वरः ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करणंकारणंकर्ता॥विकर्तागहनोगुहः॥५५

व्यवसायोव्यवस्थानः॥संस्थानःस्थानदोध्रुवः॥

परर्द्धिःपरमस्पष्टः॥तुष्टःपुष्टःशुभेक्षणः॥५६

रामोविरामोविरजो॥मार्गोनेयोनयोनयः॥६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
५

वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो ॥ धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ ५

वैकुंठः पुरुषः प्राणः ॥ प्राणदः प्रणवः पृथुः ॥

हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो ॥ व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ ५६ ॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः ॥ परमेष्ठी परिग्रहः ॥ ५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२५

उग्रः संवत्सरो दक्षो ॥ विश्रामो विश्वदक्षिणः

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः ॥ प्रमाणं बीजमव्ययं ॥

अर्थोनर्थो महाकोशो ॥ महाभोगो महाधनः ॥ ४५

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोभूः ॥ धर्मयूपो महामखः ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स

नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री ॥ क्षमः क्षामः समीहनः ॥ ९
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च ॥ क्रतुः सत्रं सतां गतिः ॥ स
र्वदर्शी विमुक्तात्मा ॥ सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमं ॥ ९०
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः ॥ सुघोषः सुखदः सुहृत ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मनोहरो जितक्रोधो ॥ वीरबाहुर्विदारणः ॥ ९८
स्वापनः स्ववशो व्यापी ॥ नैकात्मा नैककर्मकृत
वत्सरो वत्सलो वत्सी ॥ रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ९९
धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी ॥ सदसत्क्षरमक्षरम ॥ अ॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
२२

विज्ञातासहस्रांशु ॥ विधाताकृतलक्षणः ॥ १ ।
गभस्तिनेमिः सत्वस्थः ॥ सिंहो भूतमहेश्वरः ॥
आदिदेवो महादेवो ॥ देवेशो देवभृद्गुरुः ॥ ७१ ॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ॥ ज्ञानगम्यः पुरातनः ॥ ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शरीरभूतभृद्भोक्ता ॥ कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥ ३२ ॥
सोमपोऽमृतपः सोमः ॥ पुरुजित्पुरुसत्तमः ॥ वि
नयो जयः सत्यसंधो ॥ दाशार्हः सात्वतांपतिः ॥ ३३
जीवो विनयिता साक्षी ॥ मुकुन्दोऽमितविक्रमः ॥ १

म ५६

अंभोनिधिरनंतात्मा॥महोदधिशयोंतकः॥७४

अजो महार्हः स्वाभाव्यो॥जितामित्रः प्रमोदनः

आनंदो नंदनो नंदः॥सत्यधर्मा त्रिविक्रमः॥७५॥

महर्षिः कपिलाचार्यः॥कृतज्ञो मेदिनीपतिः॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो ॥ महाशृंगः कृतांतकृत् 
महावराहो गोविंदः ॥ सुषेणः कनकांगदी ॥ गु
ह्यो गंभीरो गहनो ॥ गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥ ७७ ॥ वे
धाः स्वांगोऽजितः कृष्णो ॥ दृढः संकर्षणोऽच्युतः ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स

२४

वरुणोवारुणोवृक्षः॥पुष्कराक्षोमहामनाः॥७

८॥भगवान्भगहानंदी॥वनमालीहलायुधः॥

आदित्योज्योतिरादित्यः॥सहिष्णुर्गतिसत्तमः॥७ ९

सुधन्वाखंडपरशु॥र्दारुणोद्रविणप्रदः॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८

दिवस्पृक्सर्वदृग्व्यासो ॥ वाचस्पतिरयोनिजः ॥
त्रिसामासामगःसामा ॥ निर्वाणंभेषजंभिषक्
सन्न्यासकृच्छमःशांतो ॥ निष्ठाशांतिःपरायणाः ॥ ८ ॥ १
शुभांगःशांतिदःस्रष्टा ॥ कुमुदःकुवलेशयः ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स॰ ५५

गोहितोगोपतिर्गोप्ता॥वृषभाक्षोवृषप्रियः॥८५
अनिवर्तीनिवृत्तात्मा॥संक्षेप्ताक्षेमकृच्छिवः॥श्री
वत्सवक्षाःश्रीवासः॥श्रीपतिःश्रीमतांवरः॥८६
श्रीदःश्रीशःश्रीनिवासः॥श्रीनिधिःश्रीविभावनः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः ॥ श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः २५
स्वक्षः स्वंगः शतानंदो ॥ नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वरः
विजितात्माविधेयात्मा ॥ सत्कीर्तिश्छिन्नसंशय :२५
उदीर्णः सर्वतश्चक्षु ॥ रनीशः शाश्वतः स्थिरः ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स २९

भूषयो भूषणो भूति॥ विशोकः शोकनाशनः॥
अर्चिष्मानर्चितः कुंभो॥ विशुद्धात्मा विशोधनः॥ अ
निरुद्धोऽप्रतिरथः॥ प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः॥ ८७॥
कालनेमिनिहावीरः॥ शूरः शौरिर्जनेश्वरः॥ १

त्रिलोकात्मात्रिलोकेशः॥केशवाकेशहाहरिः १८
कामदेवःकामपालः॥कामीकांतःकृतागमः
अनिर्देश्यवपुर्विष्णु॥वीरोनंतोधनंजयः॥८९
ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्म॥ब्रह्मब्रह्मविवर्द्धनः॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स २२

ब्रह्मविद्ब्राह्मणोब्रह्मी॥ब्रह्मज्ञोब्राह्मणप्रियः
महाक्रमोमहाकर्मा॥महातेजोमहोरगः॥म
हाक्रतुर्महायज्वा॥महायज्ञोमहाहविः॥स्त
व्यःस्तवप्रियःस्तोत्रं॥स्तुतिःस्तोतारणप्रियः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पूर्णः पूरयिता पुण्यः || पुण्यकीर्त्तिरनामयः ५५
मनोजवस्तीर्थकरो || वसुरेता वसुप्रदः || वसु
प्रदो वासुदेवो || वसुर्वसुमना हविः || ५२
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता || सद्भूतिः सत्परायणः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
९८

शूरसेनो यदुश्रेष्ठः ॥ सन्निवासः सुयामुनः ॥ ७६
भूतावासो वासुदेवः ॥ सर्वासुनिलयोऽनलः ॥
दर्पहा दर्पदो दृप्तो ॥ दुर्धरोऽथापराजितः ॥ ७७
विश्वमूर्तिर्महामूर्ति ॥ दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेकमूर्तिरव्यक्तः ॥ शतमूर्तिः शताननः ॥ ए ९
को नैकः सवः कः किं ॥ यत्तत्पदमनुत्तमम्
लोकबंधुर्लोकनाथो ॥ माधवो भक्तवत्सलः ॥ ९२
सुवर्णवर्णो हेमांगो ॥ वरांगश्चंदनांगदी ॥ वी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
५५

रहाविषमःशून्यो ॥ घृताशीरचलश्चलः ॥ ७८
अमानीमानदोमान्यो ॥ लोकस्वामीत्रिलोकधृ
क् ॥ सुमेधामेधजोधन्यो ॥ सत्यमेधाधराधरः ॥ ७
तेजोवृषोद्युतिधरः ॥ सर्वशस्त्रभृतांवरः ॥ ।

ग्रहो निग्रहो व्यग्रो ॥ नैकशृंगो गदाग्रजः ॥ ५५
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहु ॥ चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ॥ चतु
रात्मा चतुर्भाव ॥ चतुर्वेदविदेकपात ॥ ५६ ॥ स
मावर्तो निवृत्तात्मा ॥ दुर्जयो दुरतिक्रमः ॥ दु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म ३१

॥ लंभोऽर्गभोऽर्गो ॥

॥ ऽरावामोऽरातिहा ॥ ११२ ॥

॥ शुभांगो लोकसारंगः ॥ सु ॥

॥ तंतुस्तंतुवर्द्धनः ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ईद्रकर्मा महाकर्मा ॥ कृतकर्मा कृतागमः ॥ उद्भ
वः सुंदरः सुंदो ॥ रत्ननाभः सुलोचनः ॥ अर्को वा
जसनः शृंगी ॥ जयंतः सर्वविज्जयी ॥ ४ ॥ सुवर्ण
बिंदुरक्षोभ्यः ॥ सर्ववागीश्वरेश्वरः ॥ महाह्रदो

महागर्तो ॥ महाभूतो महानिधिः ॥ ४ ॥ कुमुदः
कुंदरः कुंदः ॥ पर्जन्यः पावनो निलः ॥ अमृतांशो
मृतवपुः ॥ सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ५ ॥ सुलभः सुव्र
तः सिद्धः ॥ शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥ न्यग्रोधोडुम्ब

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रोश्वत्थ ॥ श्चाणूरांध्रनिसूदनः ॥ ७ ॥ सहस्रार्चिः स
प्तजिह्वः ॥ सप्तैधाः सप्तवाहनः ॥ अमूर्तिरनघोऽचिं
त्यो ॥ भयकृद्भयनाशनः ॥ ८ ॥ अणुर्बृहत्कृशः ।
स्थूलो ॥ गुणभृन्निर्गुणो महान् ॥ अधृतः स्वधृतः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
२२

स्वास्यः॥ प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः॥ भारभृत्कथितो
योगी॥ योगीशः सर्वकामदः॥ आश्रमः श्रमणः क्षा
मः॥ सुपर्णो वायुवाहनः॥ १०॥ धनुर्द्धरो धनुर्वेदो
दंडो दमयिता दमः॥ ॥ ॥ अपराजितः सर्वसहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नियंतानियमोयमः ॥ ११ ॥ सत्ववान्सात्विकःसत्यः

सत्यधर्मपरायणः ॥ अभिप्रायप्रियार्होर्हः ॥ प्रिय

कृत्प्रीतिवर्धनः ॥ १२ ॥ विहायसगतिर्ज्योतिः ॥ सु

रुचिर्हुतभुग्विभुः ॥ रविर्विरोचनःसूर्यः ॥ सविता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स ११

रविलोचनः ॥ ९६ ॥ अनंतोहुतभुग्भोक्ता ॥ सुखदो
नैकदोग्रजः ॥ अनिर्विण्णः सदामर्षी ॥ लोकाधि
ष्ठानमद्भुतः ॥ ९७ ॥ सनात्सनातनतमः ॥ कपिलःक
पिरव्ययः ॥ स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति ॥ स्वस्तिभुक्स

स्तिदक्षिणः ॥ ५ ॥ अरौद्रः कुंडली चक्री ॥ विक्रम्यू
र्जितशासनः ॥ शब्दातिगः शब्दसहः ॥ शिशिरः शर्व
रीकरः ॥ ६ ॥ अक्रूरः पेशलो दक्षो ॥ दक्षिणक्षमिणां
वरः ॥ विद्वत्तमो वीतभयः ॥ पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म
२४

अन्नारणोऽङ्ककृतिह्ना ॥ गुणेयोऽङः स्वप्ननाशनः ॥
वीरहावनगाः शांतो ॥ जीवनः पर्वगस्थितः ॥ ८
ध्रुवंतरूपोनंतश्री ॥ जिनमन्त्रभयापहः ॥ वन्त
रत्नोगभीरात्मा ॥ विदिशोव्याद्दिशोदिशः ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीः॥सुवीरोरुचिरांगदः॥जन

नोजनजन्मादि॥भीमोभीमपराक्रमः॥२॥आ

धारनिलयोधाता॥पुष्पहासःप्रजागरः॥ऊर्ध्व

गःसत्पथाचारः॥प्राणदःप्रणवःपणः॥२॥प्र-

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म
२५

माणःप्राणनिलयः ॥ प्राणभृत्प्राणजीवनः ॥ त
त्वंतत्वविदेकात्मा ॥ जन्ममृत्युजरातिगः ॥ २२
भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः ॥ सविताप्रपितामहः ॥ य
ज्ञोयज्ञपतिर्यज्वा ॥ यज्ञांगोयज्ञवाहनः ॥ २३ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी ॥ यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ॥ यज्ञां
तकृद्यज्ञगुह्य ॥ मन्नमन्नादएवच ॥ २४ ॥ आत्मयो
निः स्वयंजातो ॥ वैखानः सामगायनः ॥ देवकीनं
दनः स्रष्टा ॥ क्षितीशः पापनाशनः ॥ २४ ॥ शंखभृ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
२९

न्नंदकीचक्री॥ शार्ङ्गधन्वा गदाधरः॥ रथांगपा
णिरक्षोभ्यः॥ सर्वप्रहरणायुधः॥ २५॥ ॐ नमो न
मः॥ इतीदं कीर्त्तनीयस्य॥ केशवस्य महात्मनः॥
नाम्नां सहस्रं दिव्यानां॥ अशेषेण प्रकीर्त्तितं॥ २६॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यइदंश्रृणुयान्नित्यं ॥ यच्चापिपरिकीर्तयेत ॥ ना

शुभंप्राप्नुयात्किंचि ॥ त्सोमुत्रेहचमानवः ॥ २७ ॥ वे

दांतगोब्राह्मणः स्या ॥ त्क्षत्रियोविजयीरणे ॥ वैश्यो

धनसमृद्धः स्यात ॥ शूद्रः सुखमवाप्नुयात ॥ २८ ॥ य

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म
२

र्मार्थी प्राप्नुयात् धर्मं॥ मर्थार्थी चार्थमाप्नुयात्॥
कामानवाप्नुयात्कामी॥ प्रजार्थी चाप्नुयात्प्रजा
१॥ भक्तिमान्यः सदोत्थाय॥ शुचिस्तद्गतमानसः
सहस्रं वासुदेवस्य॥ नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत्॥ १॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यशः प्राप्नोति विपुलं ॥ ज्ञातिप्राधान्यमेव च ॥ अ-
चलां श्रियमाप्नोति ॥ श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमं ॥ ९१ ॥
न भयं क्वचिदाप्नोति ॥ वीर्यं तेजश्च विन्दति ॥ भव-
त्यरोगो द्युतिमान् ॥ बलरूपगुणान्वितः ॥ ९२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रोगार्तो मुच्यते रोगा॥ द्बद्धो मुच्येत बंधनात्॥ भ
यान्मुच्येत भीतस्तु॥ मुच्येतापन्न आपदः॥ १३॥
दुर्गाण्यतितरत्याशु॥ पुरुषः पुरुषोत्तमम्॥ स्तु
वन्नामसहस्रेण॥ नित्यंभक्तिसमन्वितः॥ १४॥

वामदेवाश्रयोमर्त्यो ॥ वामदेवपरायणः ॥ सर्व
पापविशुद्धात्मा ॥ यातिब्रह्मसनातनम ॥ ३५ ॥
नवामदेवभक्तानां ॥ मत्युभंविद्यतेक्वचित ॥ ज
न्ममृत्युजरांव्याधि ॥ भयंनैवोपजायते ॥ ३६ ॥ १

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म
५५

इमं स्तवमधीयानः ॥ श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ यु
ज्येतात्मसुखक्षांति ॥ श्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥ १
७ ॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं ॥ न लोभो नाशुभा मतिः
भवंति कृतपुण्यानां ॥ भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥ १८ ॥

द्यौः सचंद्रार्कनक्षत्रा ॥ खंदिशो भूर्महोदधिः ॥
वासुदेवस्य वीर्येण ॥ विधृतानि महात्मनः ॥ १४
ससुरासुरगंधर्वं ॥ सयक्षोरगराक्षसम् ॥ ज-
गद्वशे वर्ततेदं ॥ कृष्णस्य सचराचरम् ॥ १५ ॥ इंद्रि-

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
थ:

याणि मनो बुद्धिः ॥ सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ॥ वासु॰
देवात्मकान्याहुः ॥ क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च ॥ धा ॥ सर्वागमा
नामाचारः ॥ प्रथमं परिकल्पते ॥ आचारप्रभ॰
वो धर्मो ॥ धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥ धर ॥ ऋषयः पितर॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गेदेवा ॥ महाभूतानिधातवः ॥ जंगमाजंगमंचे
दं ॥ जगन्नारायणोद्भवं ॥ ४३ ॥ योगोज्ञानंतथा
सांख्यं ॥ विद्याशिल्पादिकर्मच ॥ वेदाशास्त्राणि
विज्ञान ॥ मेतत्सर्वंजनार्दनात ॥ ४४ ॥ एकोविष्णुर्म

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
५।

हद्भुतं ॥ पृथग्भूतान्यनेकशः ॥ त्रीन्लोकान्व्याप्य
विश्वात्मा ॥ भुंक्ते विश्वभुगव्ययः ॥ ४४ ॥ इमं स्तवं भगव
तो ॥ विष्णोर्व्यासेन कीर्तितं ॥ पठेद्य इच्छेत्पुरुषः
श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥ ४५ ॥ विश्वेश्वरमजं देवं

जगतः प्रभवाप्ययं ॥ भजंति ये शुक्करातं ॥ नते
यांति पराभवम् ॥ ४७ ॥ अर्जुन उवाच ॥ पद्मपत्रवि
शालाक्ष ॥ पद्मनाभ सुरोत्तम ॥ भक्तानामनुर
क्तानां ॥ त्राता भव जनार्दन ॥ ४८ ॥ श्रीभगवानुवाच

म
भा

योमांनामसहस्रेण ॥ स्तोतुमिछतिपाण्डव ॥
सोहमेकेनश्लोकेन ॥ स्तुतएवनसंशयः ॥ धम ॥ न
मोस्त्वनंतायसहस्रमूर्तये ॥ सहस्रपादाक्षिशिरो
रुबाहवे ॥ सहस्रनाम्नेपुरुषायशाश्वते ॥ सहस्रकोटी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्राधारिणे नमः ॥ ५ ॥ नमः कमलनाभाय ॥ ना
मस्ते जलशायिने ॥ नमस्ते केशवानंत ॥ वासुदे
व नमोस्तुते ॥ ५ ॥ वासनावासुदेवस्य ॥ वासितं भु
वनत्रयं ॥ सर्वभूतनिवासीनो ॥ वासुदेव नमोस्तुते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स
४२

नमो ब्रह्मण्यदेवाय ॥ गोब्राह्मणहिताय च ॥ जग-
द्धिताय कृष्णाय ॥ गोविंदाय नमो नमः ॥ ५२ ॥
आकाशात्पतितं तोयं ॥ यथा गच्छति सागरं ॥ स-
र्वदेवनमस्कारः ॥ केशवं प्रतिगच्छति ॥ एषति

केऽकः पंथा ॥ यत्र संपूज्यते हरिः ॥ ऊपथं तेन वि
ज्ञानीया ॥ ज्ञो विंदवहिनागमे ॥ ५५ ॥ सर्ववेदेषु
यत्पुण्यं ॥ सर्वतीर्थेषु यत्फलं ॥ तत्फलं समवाप्नो
ति ॥ श्रुत्वा देवं जनार्दनं ॥ ५६ ॥ यो नरः पठते नित्यं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

म ४४

त्रिकालेकेशवालये ॥ द्विकालमेककालंवा ॥
क्षेत्रेसंवेद्यपोहति ॥ ५७ ॥ दृश्यंतेनीपवत्तस्य ॥ सौः
म्यामस्यैमहायहाः ॥ विलीयंतेचपापानि ॥ ल्वे
ह्यस्मिन्प्रकीर्तिते ॥ ५८ ॥ येनध्यानंश्रुतंयेन ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

येनाधं पठितं स्तवः ॥ दत्तानि सर्वदानानि ॥ १
सुरा सर्वे समर्चिताः ॥ ५४ ॥ इह लोके परे वापि ॥
न भयं विद्यते भवेत ॥ नाम्नां सहस्रं योधीते ॥ द्वा
दश्यां मम सन्निधौ ॥ ६० ॥ स निर्दहति पापानि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कल्पकोटिशतानि च ॥ अश्वत्थसन्निधौ पार्थ ॥
कृत्वा मनसि केशवं ॥ ९१ ॥ पठेन्नामसहस्रं तु ॥ ग
वां कोटिफलं लभेत् ॥ शिवालये पठेन्नित्यं ॥ तुल
सीवनसंस्थितः ॥ ९२ ॥ नरो मुक्तिमवाप्नोति ॥ चक्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पाशिर्वचोयथा ॥ ब्रह्महत्यादिपापानि ॥ कामका
मकृतान्यपि ॥ विलयंयातिसर्वाणि ॥ बाल्यपापस्य
काकथा ॥ ६४ ॥ इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यां
संहितायांवैयासिक्यां ॥ शांतिपर्वणिविस्नुसह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स

स्तनामंसमाप्तम् ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ भास्करायअंगुष्ठाभ्यांनमः॥विद्महेतर्जनी।
भ्यांनमः॥दिवाकरायमध्यमाभ्यांनमः॥धी।
मह्यनामिकाभ्यांनमः॥तन्नोसूर्यकनिष्ठि।
काभ्यांनमः॥प्रचोदयात्करतलकरपृष्ठाभ्यां

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सू. गा. १

नमः ॥ ॐ भास्कराय हृदयाय नमः ॥ ॐ विवस्वते शि
रसे स्वाहा ॥ दिवाकरायै शिखायै वौषट् ॥ धीम
हि कवचाय हुं ॥ तन्नो सूर्यो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ प्र
चोदयादस्त्राय फट् ॥ इति गायत्री ॥ ॐ भास्क

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गायविद्महे ॥ दिवाकरायधीमहि ॥ तन्नोः सू
र्यः प्रचोदयात ॥ ३ ॥ इतिमूलमंत्रः ॥ ॐ ह्रां ह्
ह्रीं सः सूर्यायनमः ॥ १०० ॥ ८ ॥ ॥ ॥ इति सूर्य
गायत्री ॥ ॥ ॥ श्रीरामायनमः ॥ शुभम ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ अथ कीलकस्तुतिः ॥
ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय ॥ त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ॥ श्रे
यः प्राप्तिनिमित्ताय ॥ नमः सोमार्द्धधारिणे ॥ १
सर्वविघ्नविनाशाय ॥ मंत्राणामपि कीलनम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

को
१

सोपिदेहममवाप्नोति॥ मनंतंजाप्यमनंतपरः॥
४॥ सिद्ध्यंत्युच्चाटनादीनि॥ वश्यंतिसकलाश
त्रोपि॥ पठेनस्तवंतोनित्यं॥ स्तोत्रपाठःप्रसि
ध्यति॥ ३॥ नमेदंनोपधेनत्र॥ नकिंचिदपि

सिद्ध्यति॥ विनातस्मिद्ध्येतेयेन॥ सर्वेमुच्चाटना
दिके॥ ४॥ ममग्रामालभिष्यंति॥ लोकधंका।
निर्मोहैः॥ क्लाचातिमेत्रग्रामाम॥ सर्वेमेववमि
रेणुभे॥ ५॥ स्तोत्रैवैवेडिकाग्रामस्व॥ तचग्रहलं।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कौ
२

वकारमः॥ समामोघंसत्तरोयेन॥ नेयस्थावति
मेत्रंणा॥ ६॥ सोपिदेसमसवाप्नोति॥ सर्वेसेववनेस
ष्ठाघः॥ कृसाघांवावनदेश्या॥ सष्टस्योवासम
हिनः॥ ७॥ दसानिप्रतिसद्दशानि॥ नाब्यथेघाय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सिद्ध्यति ॥ इत्थंरूपेणकीलेन ॥ महादेवेनकी
लिते ॥ ८ ॥ योनिष्कीलांविधायैनां ॥ नित्यंजपति
संस्फुटं ॥ ससिद्धः सगणाः सोपि ॥ गंधर्वोजायते
वने ॥ ९ ॥ नचैवाप्यटतस्तस्य ॥ भयंक्वापिजा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कौ
१

यते॥ नापमृत्युवशं याति॥ मृतो मोक्षमवाप्नु
यात्॥ १॥ लाभाप्रारभ्य कुर्वीत॥ लक्षकोटोगोवि
नश्यति॥ ततो हानैव संपन्न॥ मिदं प्रारभ्यते
बुधैः॥ ५॥ सौभाग्यादि वस्तु किंचित॥ दृश्यते ला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तनाजैतैः ॥ तत्सर्वैतत्प्रसादेन ॥ ततोजाप्यमि

रंश्रुभे ॥ १४ ॥ श्रानैस्तुजप्यमानैस्मिन ॥ स्तोत्रेसंप

निकश्चकैः ॥ भवत्येवसमस्तापि ॥ ततः श्रावस्य

मेवहि ॥ १५ ॥ ऐश्वर्यंतत्प्रसादेन ॥ सौभाग्यारोग्य

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

की ४

संपदः ॥ शत्रुहानिपरोमोक्षः ॥ स्तूयतेसाकि
कैर्जनैः ॥ १६ ॥ इतिश्रीकीलकस्तोत्रम् ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पांडव गीता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative